—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फ़ैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

सितम्बर, 2007 वर्ष 6 अंक 07

लैलतुलक़द्र

हमने क़ुर्आन को लैलतुलक़द्र में उतारा है। और क्या आप को मअ़लूम है कि वह लैलतुलक़द्र क्या है, लैलतुलक़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है, इस रात फ़िरिश्ते और रूहुल अमीन (जिब्रील अ़०) अपने रब के हुक्म से हर किस्म के अहकाम लेकर उतरते हैं। यह रात पूरी की पूरी सुब्ह तक सलामती वाली है।

(सूरतुल[illegible])

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि **आपका सालाना चन्दा** ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन **पर अपना खरीदारी** नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

❐ आवश्यकता ज्ञान की	सम्पादकीय	3
❐ कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
❐ भारत का संक्षिप्त इतिहास	सय्यिद अबूजर नदवी	8
❐ सूरज अपने ठिकाने की ओर दौड़ रहा है	इदारा	11
❐ खगोल शास्त्र से मुसलमानों का अनुसंधान	मु० फरकान	12
❐ फूट फोबिया	गृहीत	13
❐ लैलतुलकद्र	इदारा	13
❐ आतंकवाद	राम पुनियानी	14
❐ घर में मौत हो जाने पर	इदारा	15
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मु० तारिक नदवी	16
❐ दुन्याए इस्लाम के सब से बड़े कारी		17
❐ ऐ मेरे माहे सियाम	रूबाब रशीदी	17
❐ समय का एहसास	बिलाल अब्दुल हयी	18
❐ गठिया	इदारा	19
❐ कैसे जुदा रहेगा वह	मतलूब अहमद नदवी	20
❐ एक चिट्ठी	मूसा सय्यिद	21
❐ पुनर्जन्म	मु० रफीक कासिमी	22
❐ नअ़त	हफीज मेरठी	23
❐ इन्किलाब	अबू मर्गूब	24
❐ गुल्दार	एम यूसुफ अन्सारी	25
❐ दोगज जमीं	शंकर कुमार	26
❐ दोहे	रोहित यादव	26
❐ हिन्दोस्तानी उलमा की लाजवाब किताबें	मो० स० अबुल हसन अली	27
❐ अंध विश्वास	अब्दुर्रहीम सिद्दीकी	28
❐ मौलाना हबीबुर्रहमान न रहे	इदारा	29
❐ नमाजे तरावीह	इदारा	30
❐ भारतीय इतिहास	प्रो० श्री नेत्र पाण्डेय	31
❐ रमजानुल मुबारक के रोजे	मौ० मुजीबुल्लाह नदवी	35
❐ प्यासे बादल	समीक्षा	37
❐ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

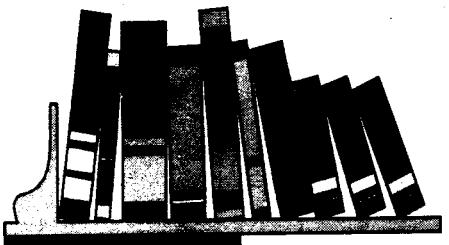

आवश्यकता ज्ञान की

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

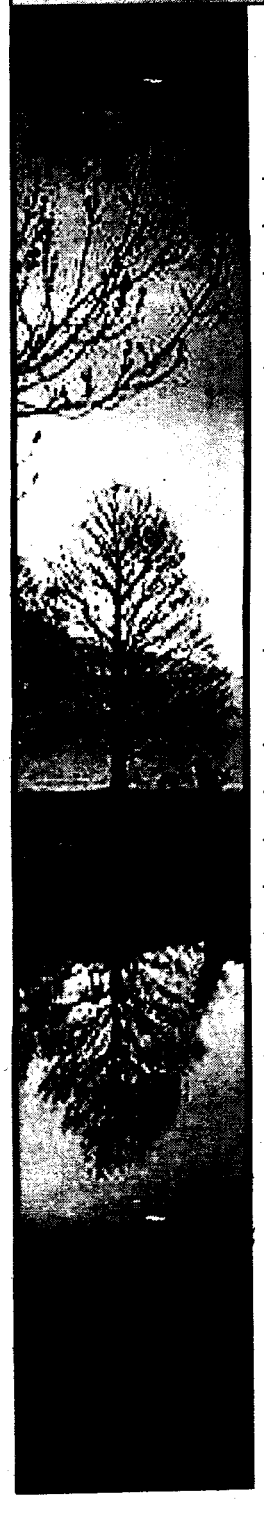

गया दौरा हुकूमत का बस अब हिकमत की है बारी
जहां मैं चार सू इल्म व अमल की है अमलदारी

वैसे "जिस की लाठी उस की भैंस" "**Might is Right**" जैसी कहावतों की पुष्ट तो क़ियामत तक होती रहेगी। इस लिए कि भलाई के साथ बुराई चलती रहेगी बल्कि क़ियामत के क़रीब तो भलाई दुन्या में रहेगी नहीं। केवल बुराई रहेगी, ऐसे में "जिस की लाठी उस की भैंस" तो होगी ही।

यह सत्य है कि जाहिल गंवार का अब कोई मूल्य नहीं, पहले बढ़ई रेखा गणित (जामेट्री) से अपरिचित होता परन्तु उस के काम में कोण (ज़ाविये) सीधी रेखाएं, समानान्तर रेखाएं, गोला परिधि सब शुद्ध मिलते किन्तु आज जब तक आई०टी०आई० का प्रमाण पत्र न हो बढ़ई को सरकारी नौकरी नहीं मिल सकती, यही हालात राजगीर की है और यही हाल लोहार का है।

ज़रूरत इल्म व दानिश की है हर फ़न्न व सनाअत में
न चल सकती है अब बे इल्म नज्जारी न मेमारी

लेकिन प्रश्न यह पैदा होता है कि इल्म (ज्ञान) है क्या? इल्म अथवा ज्ञान तो कहते हैं जानकारी को, एक लोहार लोहा लाल करके, हथौड़े से पीट कर बढ़ाता है, मोड़ता, उस से भांति–भांति की चीजें बनाता है, लेकिन लिखना पढ़ना नहीं जानता इसी प्रकार एक बढ़ई है, मेमार है, सुनार है दरज़ी है, कपड़ा बुनने वाला है, तिल्हन से तेल निकालने वाला है। यह सब अपने अपने कामों में एक सीमा तक निपुणता रखते है, लेकिन लिखना पढ़ना नहीं जानते तो उनको क्या कहा जाएगा? जाहिल ? मूर्ख या ज्ञानी, ज्ञाता? सत्य यह है कि उन को अन् पढ़ कहा जाएगा। और याद रहे कि अनपढ़ किसी कला में निपुण नहीं हो सकता, और यदि निपुण हो भी गया तो अपनी निपुणता स्थानान्तरित नहीं कर सकता, अपने ज्ञान को सुरक्षित नहीं कर सकता, यदि उस ज्ञानी ने लिखना पढ़ना सीख कर अपना ज्ञान काग़ज़ के पन्नों पर सुरक्षित भी कर दिया तो कोई अनपढ़ उस से लाभ नहीं उठा सकता। अतः ज्ञान को आगे बढ़ाने, ज्ञान को दूसरों तक पहुंचाने के लिए लिखने पढ़ने का ज्ञान प्राप्त करना अति आवश्यक है।

लिखने पढ़ने का ज्ञान प्राप्त किये बिना किसी भी कला के ज्ञान में उन्नति भी असम्भव है। नियम यही है कि एक व्यक्ति ने अपनी बुद्धि से कोई ज्ञान प्राप्त कर के उसे पुस्तक के पन्नों में सुरक्षित कर दिया उस की आयु पूरी हो गयी। दूसरा आया तो उस ने अपने से पहले वाले के ज्ञान से लाभ उठाते हुए आगे सोच कर किसी नई बात की वृद्धि की इस प्रकार उस कला में बराबर उन्नति होती रही। आज विज्ञान, भवन निर्माण, सड़क निर्माण, सेतु निर्माण, विज्ञान की हर शाखा में जो वर्तमान स्थिति है यदि आरंभ से लिख कर इसे सुरक्षित न किया जाता और आने वाली नस्ल उसे पढ़कर लाभ न उठाती तो वर्तमान अवस्था पर पहुंचना दुर्लभ हो जाता।

यह सत्य है कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत से साथी धर्म ज्ञान में

निपुण थे जब कि वह न लिखना ज़ानते थे न पढ़ना लेकिन लिखने पढ़ने वालों की आवश्यकता पड़ी। यदि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कुछ साथी पढ़ना लिखना न जानते तो आज हम तक क़ुर्आन शरीफ़ और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बातें न पहुंच पातीं।

धर्म ज्ञान के बिना तो हमारा जीवन ही बेकार कि ख़ुदा की प्रसन्नता तो हम को धर्म ज्ञान द्वारा ही प्राप्त हो सकती है और अगर ख़ुदा की प्रसन्नता न मिल पाई तो हमारा सदैव वाला जीवन सदैव दुख वाला हो जाएगा। अतः धर्म ज्ञान अति आवश्यक है। परन्तु इस जगत में भी तो जीवन बिताने के लिए बहुत सी आवश्यकताएं हैं इन की पूर्ति के लिए सांसारिक ज्ञानों की प्राप्ति भी आवश्यक है। अतः हम अंक गणित, रेखा गणित, बीज गणित, विज्ञान, समाज विज्ञान जैसे आवश्यक विषयों को अवश्य प्राप्त करें कि इन के बिना हमारा जीवन बड़ी कठिनाइयों से बीत सकेगा और सामर्थ्य हो और सम्भव हो तो किसी कला के विशेषज्ञ बनें।

परन्तु याद रखें कि जब एक कला के विशेषज्ञ बन जाएं तो दूसरी कला में जानकारी के बिना हस्तक्षेप न करें, और दूसरे विशेषज्ञों का आदर करें। जैसे आप धर्म विशेषज्ञ नहीं हैं तो धार्मिक विषयों में धर्म आचार्यों की बात मानें इसी प्रकार, डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक आदि को एक दूसरे के मुआ़मले में हस्तक्षेप न करना चाहिए और वास्तविकता यह है कि वह एक दूसरे के मुआ़मले में बोलते भी नहीं हैं, परन्तु धर्म के मुआ़मले में रिक्शा चलाने वाले से लेकर डाक्टर इंजीनियर, वैज्ञानिक सभी हस्तक्षेप करने लगते हैं, जिस के कारणों में से एक तो यह है कि धर्म कुछ विशेष प्रतिबन्धियां चाहता है और विद्वान लोग उन प्रतिबन्ध से स्वतंत्र रहना चाहते हैं। दूसरा कारण यह है कि धर्म एक ऐसे जगत और जीवन की बात करता है जो हमारी आंखों से ओझल है और उस के देख लेने का हमारे पास कोई साधन नही है, उस जगत का ज्ञान हम को ऐसे व्यक्ति के शिष्यों द्वारा मिला जिस ने बताया और सिद्ध किया कि वह ख़ुदा (ईश्वर) का अन्तिम सन्देष्टा है। अतः ऐसे लोग जिन को ईशदूत पर विश्वास न हुआ उन्होंने धर्म में हस्तक्षेप करना अपना अधिकार जाना। तीसरा कारण यह है कि धर्म का सम्बन्ध अनपढ़ से लेकर बड़े विद्वान तक है, हर व्यक्ति धर्म पर चलने के नाते कुछ न कुछ धर्म जानता है, इस प्रकार वह धर्म की गूढ़ बातों में भी बोल पड़ता है जब कि उसे उसमें न बोलना चाहिए।

फिर बात आती है कि शासन किस का है, ज्ञान का या शक्ति का? तो सच्ची बात तो यह है कि शक्ति का शासन शरीरों पर है और ज्ञान का दिलों पर, परन्तु यहां प्रश्न उठता है कि क्या बुश और उसके जैसे दूसरे विद्वान नहीं हैं, क्या वह ज्ञान रहित हैं? उत्तर यह है कि वह ज्ञान भी रखते हैं और शक्ति भी परन्तु उन का ज्ञान लाभ रहित है। अतः उन का शासन बहुत से शरीरों पर तो है लेकिन एक भी दिल पर नहीं है।

मेरे भाइयो! ज्ञान दो धारी तलवार है चाहे इस से मानव सेवा करो चाहे मानव विनाश करो। एक ही ज्ञान से मानव सेवा संभव है और उसी से मानव विनाश भी हो सकता है। अतः हर विद्यार्थी को चाहिए कि वह ज्ञान प्राप्त करते समय निर्णय ले कि हम इससे मानव सेवा करेंगे और अंतिम दूत की सिखाई यह दुआ अपने रब से मांगते रहना चाहिए : "ऐ हमारे रब (स्वामी) हम को लाभकारी ज्ञान दीजिए, और हम से वही कार्य लीजिए जो आप के यहां स्वीकृत पाए। और ऐसी आजीविका दीजिये जो वैध तथा स्वच्छ हो।"

अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना अ़िल्मन्नाफ़िआ़, व अ़मलन् मुतक़ब्बला, व रिज़्क़न् वासिआ़ हलालन् तय्यिबा।

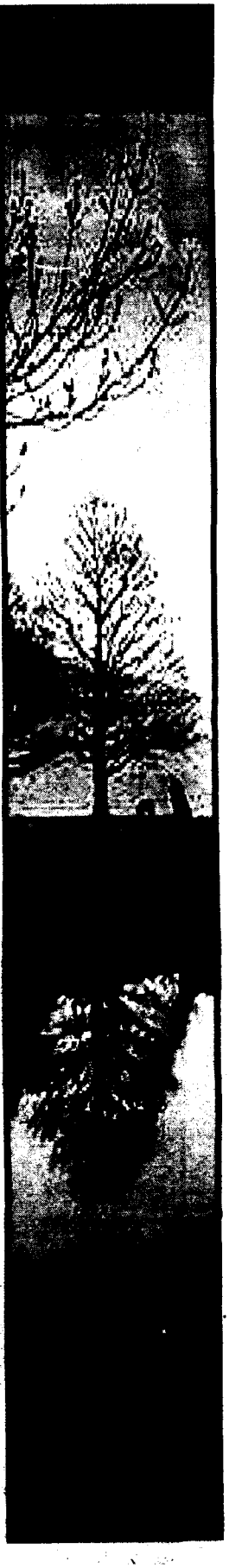

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

पूरी दुनिया के रसूल

तर्जमा : कहो कि ऐ दुन्या के इन्सानो ! मैं तुम सब की तरफ खुदा का भेजा हुआ आया हूं। वह खुदा जिस की बादशाही है आस्मानों में और जमीन में। उसके सिवा कोई बन्दगी के लाइक नहीं। वही सब को जिन्दगी और मौत देता है। पस तुम अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल उम्मी (जिस ने किसी मखलूक से पढ़ा न हो) नबी पर जो खुद भी अल्लाह पर और उसके सब कलामों (यानी उसकी नाजिल की हुयी तमाम किताबों) पर ईमान रखता है और तुम उसकी पैरवी करो ताकि तुम अल्लाह की हिदायत हासिल कर सको। (जो अब सिर्फ इस नबीए–उम्मी की पैरवी से ही हासिल हो सकती है) (अल अअ़राफ़ : १५८)

और सूरए–सबअ में खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुखातब करके फरमाया गया है कि पूरी इन्सानी दुन्या की रहनुमाई और जिन्दगी के अच्छे–बुरे अंजाम से उन को खबरदार करना आप (सल्ल०) ही के जिम्मे है और हमने इसी वास्ते आप (सल्ल०) को भेजा है।

तर्जमा : और हम ने आप को तमाम इन्सानी नस्ल के लिए बशीर (खुश खबरी देने वाला) व नजीर (डराने वाला) बना कर भेजा है (और अब आप ही से यह काम लिया जाना है)। (सबअ : २८)

और सूरए–आलि अ़िम्रान में आप (सल्ल०) को हुक्म फर्माया गया है कि तमाम दुन्या के इन्सानों को सुना दीजिए और बता दीजिए कि अब इस दौर में जो भी खुदा का तालिब (जिज्ञासू) हो और उस की बखशिश और महब्बत से हिस्सा लेना चाहता हो, उसके लिए अल्लाह की बखशिश और मुहब्बत हासिल करने की राह सिर्फ यही है कि वे मेरी पैरवी करें, यानी उस शरीअत और जिन्दगी के उस तरीके को इख्तियार करें, जो अल्लाह तआला ने इस दौर के लिए मुकर्रर फर्माया है और मेरे जरीये भेजा है। अब जो भी इस सिराते–मुस्तकीम (सीधे रास्ते) से हट कर चलेगा वह खुदा का मुजरिम और ना फर्मान समझा जायेगा और अल्लाह की मुहब्बत व इनायत और नजात से महरूम रहेगा इर्शाद है :–

तर्जमा : आप एलान कर दीजिए कि (ऐ खुदा–तलबी के मुद्दईयो) अगर तुम हकीकत में खुदा को चाहते हो तो (अब उस की राह यही है कि) मेरी पैरवी इख्तियार करो, और मेरे बतलाए हुए रास्ते पर चलो। (अगर तुम ऐसा करोगे) तो अल्लाह का प्यार तुम को नसीब होगा और वह तुम्हारे गुनाह कुसूर बख्श देगा और वह बड़ा बखशने वाला बहुत मेहरबान है। आप साफ–साफ (इन से) कह दीजिये (कि रास्ता सिर्फ यही है कि) अल्लाह की, और वक्त के पैगम्बर की (यानी मेरी) फर्मा बरदारी करो। पस अगर वे इस को न मानें तो (फिर सुन्नतुल्लाह – अल्लाह का तरीका– और खुदावन्दी कानून यह है कि) मुनकिरों और न मानने वालों से अल्लाह महब्बत नहीं करता और उन को नहीं चाहता। (आलि इम्रान : ३१, ३२)

और सूरए – अहजाब में एलान फर्माया गया कि नुबव्वत का सिसिला आप (सल्ल०) पर खत्म कर दिया गया है। आप (सल्ल०) सब नबियों के खातेम हैं। अब आप (सल्ल०) के बाद कोई नबी नहीं भेजा जायेगा जिसका जरूरी नतीजा और तकाजा यही है कि "बेअसते– मुहम्मदी (मुहम्मद स०० की नियुक्ति)" के बाद इस दुन्या में पैदा होने वाले सारे इंसानों के लिए अब आप ही की हिदायत व तालीम, को मानने के लिए खुदा का हुक्म है।

तर्जमा : (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों के खातिम भी हैं (अब इन के बाद कोई नबी दुन्या में नहीं भेजा जायेगा) और अल्लाह सब चीजों का पूरा इल्म रखता है। (अहजाब : ४०७)

इन आयतों में सैयदना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबव्वत व रिसालत, इस का आम होना और आप (सल्ल०) के खातिम होने के बारे में जो कुछ फर्माया गया है दुन्या के वाकिआत ने भी इस की पूरी पूरी

तसदीक और तौसीक (पुष्टि) की है।

इस दुन्या में हजरत इब्राहीम (अ०) व इसहाक (अ०), दावूद (अ०) व सुलैमान (अ०), मूसा (अ०) व ईसा (अ०) और इन के अलावा भी किसी मुल्क और किसी कौम में आने वाली किसी हादी (हिदायत का रास्ता दिखाने वाला) और मुसलेह (इस्लाह करने वाला) को जिन वसफों और खुसूसियतों और जिस तरह की दलीलों की वजह से खुदा का पैगम्बर माना गया है, वाकिआत की यह दुन्या गवाह है कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरगुजीदा हस्ती उन तमाम सिफतों और कमालों की जामिअ और उन सब दलीलों को लिये हुए है। और हकीकत इतनी रौशन है कि चौदह सदियां (शताब्दियां) गुजरने के बाद आज भी जिस में सच्ची तलब और इन्साफ हो, वह इस बारे में गौर व फिक्र करके पूरा इतमिनान हासिल कर सकता है।

इसी तरह जो हिदायत व तालीम आप (स०) लेकर आये वह बिला शुबह जूं की तूं महफूज है। और अपने सर्वमुखी कमाल और संतुलन की वजह से खुद इस बात का सुबूत है कि यह पूरी इन्सानी दुन्या के लिए दुन्या की तमाम कौमों के लिए यही तालीम खुदा का मुकर्रर किया हुआ जिन्दगी का कानून व दस्तूर है।

फिर तेरह सदी से ज़ियादा का काल गुजर जाने के बावजूद और इस दौर में दुन्या, की इरतिकाई रफतार के तेज से तेज होने के बावजूद आप की लाई हुई तालीम का इन्सानों की दीनी व रूहानी रफतार के तेज से तेज होने के बावजूद आप की लाई हुी तालीम का इन्सानों की दीनी व रूहानी हिदायत के लिए उसी तरह काफी होना जिस तरह कि आज से चौदह सौ बरस पहले के इंसानों की हिदायत के लिय वह काफी थी, इस हकीकत का बड़ा ही रौशन वाकिआती (घटनात्मक) सुबूत है कि इन्सानों को पैदा करने वाले और नबियों–रसूलों को भेजने वाले खालिक व मालिक ने नुबूव्वत के सिलसिले को आप (सल्ल०) पर खत्म कर दिया है, और अब आप (सल्ल०) ही का दौर–दौरा है, आप (सल्ल०) ही की तालीम व हिदायत दुन्या की तमाम कौमों के लिए खुदाई तालीम व हिदायत है। और आप (सल्ल०) ही की पैरवी से अब खुदा की रिजा (प्रसन्नता) और रहमत को पाया जा सकता है। अल्लाह के जिन बन्दों ने अभी तक इन खुली हकीकतों पर संजीदगी से गौर नहीं किया है काश वे साफ ज़िहन और नेक नियती के साथ गौर करें और इस दौर की खुदाई तालीम व हिदायत को अपनाकर खुदा के साथ बन्दगी के अपने संबंध को सही करें।

(पृष्ठ ७ का शेष)

जिम्मेदार है। औरत अपने शौहर की और उसके लड़कों की जिम्मेदार है। तुम सबसे उसकी रअियत के मुतअल्लिक पूछा जायेगा।

(बुखारी–मुस्लिम)

शौहर की इताअत

हजरत तलक (र०) बिन अली से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब मर्द अपनी बीवी को बुलाये तो वह आये अगरचि तनूर पर बैठी हो।

(तिर्मिजी–निसाई)

शौहरों की ताजीम की इन्तिहा

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया अगर मैं किसी को सज्दे का हुक्म देता तो औरतों को हुक्म देता कि वह अपने शौहरों को सज्दः करें। (तिर्मिजी)

शौहर की रजामन्दी का नतीजा

०हजरत उम्मुल मोमिनीन उम्म सल्मः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब औरत मर जाये और उसका शौहर उससे राजी हो तो वह जन्नत में दाखिल होगी। (तिर्मिजी)

शौहर को तकलीफ देना

हजरत मआज (रह०) बिन जबल से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया बीवी जब अपने शौहर को दुनिया में तकलीफ देती है तो फराखचश्म हूरों में से जो उस की बीवी होगी, वह कहती है कि तेरा बुरा हो, वह तेरा मेहमान है, तू उसको तकलीफ न दे, करीब है कि अल्लाह तुझसे जुदा कर दे और हमारी तरफ कर दे। (तिर्मिजी)

औरतों का फितना

हजरत उसामः (र०) बिन जैद से रिवायत है कि नबी (स०) ने फरमाया, मैंने अपने बाद कोई फितना मर्दों के लिए औरतों से जियादः नहीं छोड़ा। (बुखारी मुस्लिम)

रमजान में नेकियों का सवाब सत्तर गुना बढ़ा दिया जाता है इस लिए नेकियां बढ़ा देजिये। कोशिश कर के गरीब रोजेदारों की सहरी और इफतारी में मदद कीजिए।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

हजरत अम्र बिन अलआस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज्जतुलवदाअ में अल्लाह की तारीफ और सना बयान की और फरमाया औरतों के साथ भलाई करो, वह तुम्हारे यहां बतौर कैदी के हैं। इसके सिवा तुम उनके किसी चीज के मालिक नहीं हो। अगर वह गलती कर बैठें तो उनसे अलग रहो और उनको ऐसा मारो कि उनको तकलीफ न हो। पस अगर वह मान लें तो उन पर कोई तकलीफ न डालो और सुन लो कि तुम्हारी बीवियों पर तुम्हारा हक है और तुम्हारी बीवियों पर तुम्हारा हक है। तुम्हारा उन पर यह हक है कि तुम्हारे बिस्तरों पर उनको न बिठायें जिन को तुम नापसन्द करते हो और तुम्हारे घरों में उनको न बुलायें जिनका आना तुम्हें नापसन्द हो। और तुम पर उनका हक यह है कि उनके खिलाने–पहनाने में भलाई करो। (तिर्मिजी)

औरतों के हुकूक

हजरत मुआवियाः (र०) बिन हैदः से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया कि हमारी बीवियों का हम लोगों पर क्या हक है। आपने फरमाया कि जब तुम खाओ तो उनको भी खिलाओ और जब पहनो तो उनको भी पहनाओ और उनके मुंह पर न मारो और उन्हें गालियां न दो और उनको न छोड़ो मगर घर में । (अबू दावूद)

कामिलतरीन मोमिन की तारीफ

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया सबसे जियादा कामिल मोमिन वह है जो अख्लाक में और अपने घर वालों के लिए अच्छा हो। (तिर्मिजी)

बदसुलूक शौहर

हजरत अयाज़ (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और अर्ज किया या रसूलल्लाह। औरतें अपने शौहरों पर बहुत दिलेर हो गयीं तो आपने उनको मारने की इजाजत दी। पस औरतें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घरों के गिर्द फिरने लगीं और अपने शौहरों की शिकायत करने लगीं। आपने फरमाया कि मुहम्मद (सल्ल०) के घर वालों को बहुत सी औरतों ने घेर लिया जो अपने शौहर की शाकी हैं। उनके शौहर अच्छे लोग नहीं हैं। (अबू दावूद)

दुन्या की बेहतरीन दौलत

हजरत अब्दुल्लाह (रह०) बिन अम्र बिन अलआस से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया, दुनिया एक पूंजी है। और उसकी बेहतरीन दौलत नेकबख्त बीवी है। (मुस्लिम)

शौहर की नाराजगी

हजरत अबू हुरैरः (रह०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो शौहर अपनी बीवी को बुलावे और वह न आवे उसको उसका शौहर रात को उससे नाराज रहे तो फिरिश्ते उस पर सुबह तक लानत करते रहते हैं। (बुखारी–मुस्लिम)

और इन दोनों की एक रिवायत में है, जब औरत अपने शौहर से बिगड़ कर रात गुजारती है तो फिरिश्ते उस पर सुबह तक लानत करते हैं।

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कसम है उस जात की कि जिस के कब्जए कुद्रत में मेरी जान है। जो मर्द अपनी बीवी को अपने पास बुलाये और औरत आने से इन्कार करे तो आसमान वाले सब उस पर नाराज होंगे यहां तक कि शौहर उससे राजी हों।

शौहर की इजाजत

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, किसी औरत को जाइज नहीं कि उसका शौहर मौजूद हो और वह उसके बगैर इजाजत नफ्ल के रोजे रक्खे और उसकी बगैर इजाजत दूसरों को उसके घर में बुलाये। (बुखारी–मुस्लिम)

तुम में का हर एक जिम्मेदार

हजरत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया तुम में का हर एक जिम्मेदार है। हर एक से अपनी रअियत के मुतअल्लिक पूछा जायेगा। मर्द अपने घर वालों पर

(शेष पृष्ठ ६ पर)

चौथी किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदवी

गौरी और उनके गुलामों की हुकूमत

सुल्तान शहाबुद्दीन गौरी: काबुल की सीमा में ग़ज़ना से दूर एक पर्वत का नाम गौर है। शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी का खानदान बहुत दिनों से वहां निवास करता था। जब ग़ज़ना का शासक कमजोर हो गया तो यह खानदान शक्तिशाली होकर गजना और हिन्दुस्तान पर काबिज हो गया शहाबुद्दीन मुहम्मद ११३७ ई० (५३२ हि०) में गौर में पैदा हुआ। और अपने भाई ग्यासुद्दीन मुहम्मद के बादशाह होने पर सल्तनत में उसका साझी बना और उसने अपना समय अधिकतर हिन्दुस्तान में विजय प्राप्त करने और हमलों में व्यतीत किया। ११७५ ई० (५६१ हि०) में सब से पहले उसने मुलतान पर हमला किया जहां इस्माईलीयों ने दोबार शक्ति हासिल कर ली थी। फिर सिन्ध के शहर ऊछ पर विजय प्राप्त की। ११७७ ई० (५७६ हि०) में ऊछ के रास्ते रेगिस्तान को पार करके गुजरात में दाखिल हुआ। गुजरात का राजा मूल राज द्वितीय और उस के चचा भीम देव तृतीय से जंग हुई मगर मुहम्मद गौरी पराजित होकर वापस गया और सिन्ध पर अली करमाख को हाकिम बना गया। ११८६ ई० (५८२ हि०) जब लाहोर फतह हुआ तो यह इलाका भी उसके सुपुर्द हुआ। ११६२ ई० (५८६ हि०) में शहाबुद्दीन गौरी ने भी भटिंडा पर कब्जा कर लिया जो दिल्ली के राजा राय पिथौरा के कब्जे में था। यह सुनकर राजा लड़ाई के लिए तैयार हो गया। मुहम्मद गौरी इसके लिए तैयार न था बल्कि गजना वापस जा रहा था कि राजा के आने की सूचना पाकर लड़ने के लिए वह भी चल पड़ा।

तराईन के स्थान पर दोनों का मुकाबला हुआ। गौरी पराजित होकर गजना चला गया। एक वर्ष के बाद ११९३ ई० (५८५ हि०) में गौरी फिर आया और उसी मैदान में भारी लड़ाई के बाद राय पिथौरा मारा गया और दिल्ली पर मुहम्मद गौरी का कब्जा हो गया। इस विजय से सरस्वती, बांसी, समाना और कुहराम आदि सब उस की सल्लतन में शामिल हो गये। अजमेर में राय पिथौरा के लड़के को गद्दी पर बैठा कर मुहम्मद गौरी गजना वापस हुआ और फतह किये हुए इलाके अपने गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक के सुपुर्द कर गया जिसने पहले कुहराम और फिर दिल्ली को राजधानी बनाया।

उसी वर्ष मेरठ फतह हुआ ११९४ ई० (५८९ हि०) में अलीगढ़ पर कुतुबुद्दीन ने कब्जा किया ११९५ (५९० हि०) में शहाबुद्दीन को फिर हिन्दुस्तान आना पड़ा ताकि राजा कन्नौज से सीमावर्ती लड़ाई का फैसला करे। एटावा के पास दोनों का मुकाबला हुआ। राजा कन्नौज जयचन्द मारा गया और कन्नौज से लेकर बनारस तक का इलाका गौरी के कब्जे में आ गया। १२०६ ई० (६०२ हि०) में खोखरों के उत्पात के कारण मुहम्मद गौरी फिर हिन्दुस्तान आया और वापसी के समय रात के एक खोखर ने जो शायद इस्माईली था खेमे में घुसकर सुल्तान शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी को शहीद कर डाला। लाश गजना लेजाकर दफन हुई और उसकी सल्तनत उसके विभिन्न गुलाम अफसरों में बटगई जिन में से बलाजर, नासुरिद्दीन कबाचा और कुतुबुद्दीन ऐबक तीन मशहूर तुर्क सालार थे।

कुतुबुद्दीन ऐबक

गजनी पर बलाजर ने, सिन्ध पर नासिरूद्दीन कबाची ने, हिन्दुस्तान पर कुतुबुद्दीन ऐबक ने कब्जा कर लिया। हिन्दुस्तान के लोगों ने कुतुबुद्दीन को अपना बादशाह स्वीकार कर लिया। उसने अपनी राजधानी पहले लाहौर को बनाया ताकि सरहदी शासन हमेशा चुस्त दुरुस्त रहे ओर किसी को हिन्दुस्तान पर हमले का साहस न हो। उसने दिल्ली में एक शानदार मसाजिद तैयार की जिस का नाम कूवतुल इस्लाम रखा। उस का एक मीनारा जिसको लोग कुतुब की लाठी (कुतुबमीनार) कहते हैं। इसकी बुनियाद इसी ने रखी थी। ११९४ ई० (५९२ हि०) में चन्द्रावती, आबू और नागोर के राजाओं ने मिलकर अजमेर उससे छीन लेना चाहा। उसने अजमेर में पड़ाव डाल कर प्रबन्ध करना

आरम्भ किया और ताजा दम सहायक फौज मंगवाकर उनको पराजित किया। ११६६ ई० (५६३ हि०) में उसने दोबारा गुजरात फतह कर लिया और वहां अपना एक सहायक मोकर्रर करके वापस आया मगर गुजरात के राजा ने उस से मुल्क छीन लिया। कुतुबुद्दीन उस समय कबाचा और बुलदोज से लड़ाई में फंसा हुआ था। इस लिए कुतुबुद्दीन इस तरफ ध्यान न दे सका।

उसके एक बहादुर अफसर मुहम्मद बख्तयार खिलजी ने ११६६ ई० (५६६ हि०) में बिहार और बंगाल को फतह करके उस की हुकूमत में शामिल किया। कुतुबुद्दीन एक सिपहसालार होने की हैसियत से जितना बहादुर और मेहन्ती था, बादशाह होने के बाद भी अति अधिक मेहंती और बहादुर रहा। वह बड़ा दानी व दाता था। इसी लिए उस को लखबख्श कहते हैं। लाहौर में चौगान खेलते हुए घोड़े से गिरकर १२१० ई० (६०६ हि०) में मर गया। उसके मरने पर लोगों ने उसके लड़के "आराम शाह" को लाहौर में बादशाह बनाया लेकिन एक ही साल के भीतर उसे तख्त से उतार दिया गया।

सुल्तान शमशुद्दीन अलतमश : अलतमश एक तुर्की गुलाम था, जिसने कुतुबुद्दीन के अधीन अच्छे अच्छे काम किये थे, जिससे प्रसन्न होकर उसने अपनी लड़की व्याह दी थी और बयाना का हाकिम बनाया था। १२१० ई० (६०७ हि०) में आराम शाह की जगह वह दिल्ली की सल्तनत के सदस्यों की सर्वसम्मति से तख्त पर बैठा। १२१८ ई० (६१२ हि०) में गजना के सरदार अमीर ताजुद्दीन यलदोज ने पंजाब पर कब्जा करना चाहा। अलतमश एक जंगजू लशकर के साथ उसके मुकाबले पर आया। यलदोज पराजित होकर गिरिफतार हुआ १२१० ई० (६१४ हि०) में नासिरूद्दीन कबाचा ने पंजाब पर कब्जा करने का इरादा किया परन्तु असफल रहा। १२२१ ई० (६१८ हि०) में चंगेज खां तातारी ख्वारजम शाह के पीछे पीछे सिन्ध तक आया लेकिन नदी के उस पार से वापस चला गया। १२२५ ई० (६२२ हि०) में अलतमश ने बंगाल के बागियों का दमन किया। १२२८ ई० (६२५ हि०) में उसने सिन्ध की ओर ध्यान दिया। सिन्ध के अमीर नासिरूद्दीन कबाचा ने उससे पराजित होकर पानी में डूब कर जान दे दी। अलतमश ने सिन्ध पर कब्जा कर लिया फिर रनथंबौर का किला फतह किया। १२३१ ई० (६२६ हि०) में गॉवालियार भी फतह हो गया। १२३२ ई० (६३० हि०) में दिल्ली के इस मशहूर सुल्तान का देहान्त हो गया। पेशावर से विन्ध्या चल तक और समुद्र तट से ब्रहमपुर तक सारा उत्तरी भारत उस की हुकूमत में था और वास्तव में वह हिन्दुस्तान का पहला स्वतंत्र सुल्तान हुआ।

सुल्तान रजिया बेगम :

शमशुद्दीन अलतमश का छोटा लड़का रूकनुद्दीन बाप के बाद तख्त पर बैठा मगर चूंकि वह समझदार न था, इस लिए महल वाले उससे नाराज होकर फसाद पर आमादा होगए और आखिर उसको कैद कर दिया। उसके बाद उसकी बहन सुल्तान रजिया तख्त पर बैठी। हिन्दुस्तान में यही एक मुसलमान औरत है जो दिल्ली के सिंघासन पर बैठी। उसने हिम्मत और साहस से सल्तनत की। वह मर्दाना वस्त्र पहन कर तख्त पर बैठती और सल्तनत के सारे काम पूरा करती लेकिन तुर्क सरदारों को एक औरत की हुकूमत पसन्द न आई। तीन ही साल के बाद उपद्रव करके उस को कैद कर दिया लेकिन जिस सरदार के पास उसको कैद किया था, उसी ने रजिया से शादी कर ली। उधर दिल्ली के तख्त पर उस का भाई बहराम काबिज हो गया था। रजिया एक फौज के साथ मुकाबले को निकली मगर १२३६ई (६३७ हि०) में पराजित होकर भाग निकली। चन्द देहातियों ने माल की लालच में उसको कत्ल कर डाला। १२४१ ई० (६३६ हि०) जब मुगल (तातारी) लाहोर तक पहुंच गये और सुलतान बहराम से उस का कोई उचित प्रबन्ध नहीं हो सका तो फौजी बागियों ने महल में घुस कर उस को कत्ल कर दिया और उस के बाद रूकनुद्दीन के लड़के अलाउद्दीन को बादशाह बनाया। उस ने अपने पुराने तुर्की अफसरों की सहायता से मुगलों पर विजय पाई लेकिन अपने बुरे व्यवहार से लोगों को नाखुश कर दिया। इस लिए लोगों ने साजिश करके १२४६ ई० (६४४ हि०) में उस को भी कत्ल कर डाला।

सुल्तान नासिरूद्दीन महमूदः

यह सुल्तान अलतमश का छोटा लड़का है। बहुत ही सदाचारी और सरल स्वभाव का आदमी था। उसकी बादशाही का असल बानी बलबन नाम का एक तुर्क अफसर है। बलबन, जिसको अब अलग ख़ां की उपाधि मिल गई थी, बड़ा बहादुर और नीतिज्ञ (मुदब्बिर) था उसकी वजारत से शमसी खानदान की सल्तनत मजबूत हो गई और फसादी तुर्कों के साहस व उत्साह

पस्त हो गये। सुलतान नासिरूद्दीन सूफी स्वभाव का आदमी था। उसकी केवल एक ही बेगम थी जो अपने हाथ से खाना पकाती और बादशाह अपने हाथ से किताबें लिख कर बेचता और उसी की आमदनी से जिन्दगी गुजारता। चूंकि दो बार तातारी मुगलों को उस के जमाने में पराजय हुई थी, इस कारण मुगलों ने भी हिन्दुस्तान का लोहा मान लिया और दोस्ताना सम्बन्ध कायम करने के लिए एक दूत भेजा जिस को प्रभावित करने के लिए एक शानदार दरबार में बुलाया गया १२६६ ई० (६६४ हि०) में सुल्तान लावल्द स्वर्गवास कर गया। इन तुर्की गुलामों के जमाने में एक ऐसा मौरूसी बादशाह गुजरा है जिसने अमनके साथ बीस वर्ष हुकूमत की।

सुल्तान ग्यासुद्दीन बलबन :

बलबन वास्तव में एक तुर्क गुलाम था। शमशुद्दीन अलतमश ने उसको खरीद कर फौजी और शाही शिष्टाचार (आदाब) सिखाए अपनी लड़की से उस की शादी कर दी। जब नासिरूद्दीन लावल्द मर गया तो बादशाही का ताज उसने अपने सिर पर रखा और सुल्तान ग्यासुद्दीन बलबन अपना नाम इख्तियार किया। उसकी बहादुरी और युद्ध की तदबीरों से तमाम अफसर उस से डरते और आज्ञाकारी रहे। उस ने देश का बेहतरीन प्रबन्ध किया। मुगलों के बार बार हमलों को बराबर रोकता रहा। उसकी उम्र भर सारी तवुज्जह मुगलों की रोकथाम में रही। इसी कारण से उसकी सल्तनत में कोई नया प्रान्त दाखिल नहीं हुआ। वह फौजों को कभी बेकार रहने नहीं देता। जाड़ों में शिकार के बहाने उनके लिये फिरता। १२८६ ई० (६७८ हि०) में बंगाल के हाकिम तुगरल ने जब बगावत की तो खुद जाकर उस ने उसको पराजित किया और अपने लड़के बुगरा खां को उस की जगह हाकिम बना कर वापस आया। मुलतान और पूरे पंजाब का इंतजाम उस के योग्य लड़के मुहम्मद को सुपुर्द था। १२६४ (६८३ हि०) में तातारी मुगलों का एक लशकर अचानक आ पड़ा। सुल्तान ने बड़ी बहादुरी से मुकाबला करके उन को पराजित किया मगर वह खुद उस लड़ाई में नमाज पढ़ते हुए शहीद हो गया। इस घटना से सुल्तान बलबन की कमर टूट गई और वह दिन प्रतिदिन बीमार और कमजोर होता गया। आखिर अस्सी वर्ष की उम्र में बीस वर्ष हुकूमत करके १२६६ ई० (६८५ हि०) में उसका देहान्त हो गया।

सुल्तान मुअज्जुद्दीन कैकबाद:

सुल्तान बलबन के बाद बुगरा खां का लड़का कैकबाद मुअज्जद्दीन के लकब (उपाधि) से सरदारों की सलाह से दिल्ली की सलतनत का बादशाह बना लेकिन कमहिम्मती और ऐयाश था। शराब और कबाब में सारा समय व्यतीत करने लगा। दुर्भाग्य से उस का एक मंत्री निजामुद्दीन भी बुरी नियत का था। उसकी सलाह से अपने बाप बुगरा खां पर, जो बंगाल का हाकिम था, चढ़ाई की। यद्यपि अन्त में सुलह हो जाने पर बुगरा खां ने अपने बेटे को बहुत समझाया लेकिन दिल्ली वापस आकर वह तमाम नसीहतें बिल्कुल भूल गया। आखिर दरबारी सरदारों ने तंग आकर जहर से निजामुद्दीन का काम तमाम कर दिया। दरबार के सरदारों में से फिरोज खिल्जी सबसे अधिक ताकतवर था। इसी कारण मंत्री का पद उसी को दिया गया। तीन वर्ष कैकबाद ने हुकूमत की। इस अवधि में वह इस कदर बीमार और कमजोर हो गया था कि उस का रहना न रहना बराबर था। तुर्क सरदारों को खिल्जियों की वजारत पसन्द न आई। कैकबाद के छोटे लड़के को अपने कब्जे में करके उत्पात के लिए आमादा हो गये लेकिन फिरोज खिल्जी एक अनुभवी और सीनियर अफसर था, उसने खिलजियों को इकट्ठा करके शाहजादे को तुर्कों से छीन लिया और तुर्कों की बागी फौज को तलवार के घाट उतार कर तितर बितर कर दिया और कैकबाद को कत्ल कराकर खुद तख्त का मालिक बन बैठा। कैकबाद गुलामों के खानदान का आखिरी बादशाह था। दूसरे शब्दों में उस पर हिन्दुस्तान में तुर्कों की हुकूमत समाप्त हो गई। यह घटना १२८८ ई० (६८७ हि०) की है।

तुर्की हुकूमत के काम :

इन तुर्कों का शासन सौ वर्ष रहा। इस अवधि में हिमालय से लेकर विन्ध्यालय तक और सिन्ध के तटों से ब्रहमपुत्र तक सारा उत्तरी भारत उनके अधीन रहा। उन्होंने अपने जमाने का बड़ा भाग विजय और देश को बढ़ाने में बिताया। सबसे महत्वपूर्ण काम यह किया कि मुगलों और तातारियों को हिन्दुस्तान में घुसने न दिया। यद्यपि दुश्मन के न होने पर वह आपस में लड़ने लगते लेकिन दुश्मन के आते ही सब एक हो कर दुश्मन का मुकाबला करते। यह तुर्क यद्यपि निरे सिपाही थे। फिर भी उलमा के सम्मान में कमी नहीं करते थे। इसी लिये काज़ी मिनहाज सिराज जैसे विद्वान, हसन निजामी जैसे इतिहासकार, ग़ौरी जैसे

विद्वान, और खुसरो जैसे कवि उनके दरबार में नजर आते थे। बारबार तातारी आक्रमण के कारण वह लड़ाइयों में इतने व्यस्त रहे कि देश की कृषि और उद्योग की ओर ध्यान नहीं दे सके लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनके जमाने में व्यापार को काफी उन्नति मिली और इसी लिए हमेशा हम गजना और तुर्किस्तान के काफिले दिल्ली में आते जाते देखते हैं। मुश्क अम्बर, जंग का सामान, घोड़े और गुलामों का व्यापार अधिक था।

उनके काल में औरतें भी राजनीतिक और समाजी कामों में भाग लेती थीं। रजिया सुल्तान खुद हथियार लगाकर घोड़े पर सवार होती और लड़ाइयों में भी भाग लेती। फौजी दशा बहुत अच्छी और रसद पहुंचाने का विभाग बहुत अच्छा था। इसी कारण बाहर के हमला करने वाले को उन्होंने देश में घुसने नहीं दिया और लापरवाही से कभी कभी आ गए तो वह ठहर नहीं सके। बादशाह फुर्सत के दिनों में फौज को आराम देने न देते थे बल्कि शिकार के बहाने उन को इधर उधर व्यस्त रखते। सिपाहियों का वेतन नकद मिलता था। और लड़ाई के समय रंगरूटों को पहचानना इन बड़े अफसरों का कर्तव्य होता जिनको बड़ी बड़ी जागीरें इसलिए मिली थीं।

देश के विभिन्न भागों पर एक एक हाकिम नियुक्त था जिसको फौजी और मुलकी हर प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। वार्षिक कर और लड़ाई में दुश्मन से जो सामान हाथ आता, उस में अच्छी चीजें सुल्तान के पास दिल्ली भेजते रहते। उनके जमाने में न्याय का काम काज़ियों को सुपुर्द था। काजियों का उच्चतम अफसर जिसको काज़ियुलकुज़्ज़ात कहते थे, दिल्ली में रहता। हिन्दुओं को हर तरह की धार्मिक आजादी थी। शान्ति की हालत में कभी कोई मंदिर तोड़ा नहीं गया।

उनका दरबार बड़ा शानदार होता था। दाहिनी ओर शाही खानदान के लोग और बाईं ओर सरदार, वजीर फौजी और देश के अफसर होते। दूसरे देशों के दूत भी आते थे। नासिरूद्दीन महमूद के काल में तातारी दूत जब आया था तो उस पर प्रभाव डालने के लिए दरबार बड़ा शानदार सजाया गया। उनके जमाने में भवन निर्माण बहुत अधिक हुआ। लाल कौशिक, मस्जिद कुवतुल इस्लाम कुतुब मीनार बहुत से किले और शानदार महल तैयार किये गये।

सूरज अपने ठिकाने की ओर दौड़ रहा है

यह शीर्षक सूर–ए–यासीन की आयत ३८ के एक वाक्य का अनुवाद है। इसके आधार पर बहुत से लोगों का मत हुआ कि सूरज जमीन के गिर्द चक्कर लगाता है जिस से दिन रात बनते हैं। बल्कि पहले तो लोगों का यह मत था कि यह भू (जमीन) चिपटी है और इस पर दिन होता है तो पूरी जमीन पर दिन होता है, फिर सूरज डूबता है तो कहीं चला जाता है और पूरी दुन्या में रात आ जाती है। लेकिन साइंसी तरक्की ने एक अन पढ़ के लिए भी यह सिद्ध कर दिया कि जब भारत में आधी रात होती है तो अमरीका में दिन के दोपहर का वक्ता है, यह बात फून से उसी वक्त सिद्ध हो जाती है। दूसरे तर्कों के साथ हवाई जहाज ने भी सिद्ध कर दिया कि भू गोल है।

भूगोल विद्वानों ने तर्क के साथ सिद्ध किया कि पृथ्वी का यह गोला अपनी धुरी पर एक ओर को २३ १/२ अंश झुका हुआ है, इस के ऊपरी (उत्तरी) और नीचे का (दक्षिण) भाग सेब की भांति चिपटे है। पृथ्वी का यह गोला अपनी धुरी पर सूरज के समक्ष लट्टू की भांति घूमता है और एक चक्कर २४ घंटों में पूरा करता है इस से दिन और रात बनते हैं, पृथ्वी का जो भाग सूरज के सामने होता है उस में दिन और जो आड़ में होता है उस में रात होती है। इस से यह मत गलत हो गया कि सूरज जमीन के गिर्द चक्कर लगाता है। लकिन जो लोग कुर्आन शरीफ की बात "सूरज चलता है" से सूरज का पृथ्वी के गिर्द घूमना समझ रहे थे उन्होने भूगोल की इस जानकारी को कुर्आन के विरूद्ध समझ कर इसे मानने से इन्कार कर दिया हालांकि यह उन की भूल है। भूगोल वालों ने स्वयं सूर्य का चलना सिद्ध किया है और बताया है कि सूर्य अपने कहकशाई मंडल के साथ जिस में भूमण्डल भी है एक ओर को ७२००० किमी० प्रति घंटे की गति से भाग रहा है अतः कुर्आन शरीफ की बात भी सिद्ध है।

अब रही यह बात कि जब पृथ्वी १६६६ किमी० प्रति घण्टे के वेग से घूम रही है तो इस पर बने भवन गिर क्यों नहीं जाते, और चील पृथ्वी पर से उड़ते ही दूर क्यों नहीं जा पड़ती, विमान भू छोड़ते हैं बहुत दूर क्यों नहीं हो जाता? इस सब का उत्तर यह है कि भूमण्डल अपने अंतरिक्ष के साथ घूमता है जिस प्रकार रेल का डिब्बा अपने अंतरिक्ष के साथ भागता है। और डिब्बे के भीतर रेल के वेग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसी प्रकार भूमण्डल के अंतरिक्ष का विमानों, चिड़ियों और उस पर बने भवनों पर पृथ्वी के वेग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसी प्रकार सूर्य ७२००० किमी० के वेग से पृथ्वी तथा अपनी आकाश गंगा के साथ भाग रहा है।

खगोल शास्त्र में मुसलमानों का अनुसन्धान

मु० फुरकान संभली

कहा जाता है कि यूरोप ने खगोल शास्त्र (इल्मे फलकयात) का ज्ञान मुसलमानों से प्राप्त किया लेकिन यह स्वीकार करने से बचते रहे कि ज्ञान का यह प्रकाश कहां से आया। इस वास्तविकता को संसारा के विभिन्न बुद्धिजीवियों ने अपने अपने तौर पर स्वीकार किया है कि मुसलमान साइंसदानों ने ही निरीक्षण (मुशाहिदात) प्रयोगों (तजरबात) और अनुसंधान (तहकीकात) की बुनियाद डाली। हिट्टी (Hitti) ने अपनी पुस्तक ए शार्ट हिस्टरी आफ अरब में लिखा है कि मध्य कालीन युग में किसी कौम ने इंसानी तरक्की में उतना भाग नहीं लिया जितना कि मुसलमानों ने। हेनरी परम्ने (हेनरी पीरमने) ने इस बात को स्वीकार किया है कि इस्लाम ने भमण्डल की शकल ही बदल दी।

अब प्रश्न यंह है कि फिर तमाम खगोल विज्ञान की तहकीकात यूरोप से क्यों जोड़ दी गयीं। यूरोप में इस्लामी खगोल शास्त्र का भण्डार बगदाद की बैतुलहिकमत नाम की अनजुमन के द्वारा पहुंचा। इस संस्था को १८३२ ई० में बगदाद की हुकूमत ने कायम किया था और उस में अरबों की लिखी हुई किताबों का अनुवाद लातीनी (लैटिन) यूनानी (ग्रीक) आदि भाषाओं में किया जाता था। शायद इस काम का उद्देश्य यूरोप में भी अपना नाम रोशन करना था लेकिन हुआ यह कि सब गुमनामी के अन्धकार में खो गये। और यूरोप वालों ने इस से लाभान्वित होकर तमाम दुन्या को रोशन करने का सम्मान प्राप्त कर लिया।

जब मुसलमान खगोल शास्त्रियों (माहिरीने फलकयात) की किताब यूरोप पहुंची तो उन्होंने यह खतरनाक काम अंजाम दिया कि उनके लेखकों के नामों में बदलाव करके उन्हें यूरोपी अंदाज में पेश किया। जैसे 'इब्नेरशद' को एवरनेस 'बूअली सीना' को एवीसेना और मूसा बिन मौमून को मैमूनिड्स लिखा गया। इसी तरह और नामों में भी बदलाव कर दिया गया। इस तरह यह तबदील किये हुए नाम मशहूर हुए। वास्तव में यूरोपीय लोगों की यह एक सोची समझी साजिश थी कि दुन्या–ए–साइंस से मुसलमानों के सेवाओं के अतिरिक्त उनके नाम को भी दूर रखा जाये। इनकी यह कोशिशें सफल भी रहीं लेकिन ऐसे सैकड़ों ऐतिहासिक संदर्भ (हवाले) मिले हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि निःसन्देह अरब मुसलमानों के द्वारा ही साइंस और खगोल शास्त्र की बाढ़ आई और पूरे संसार में फैल गया।

यह मुसलमान खगोल शास्त्र वैज्ञानिकों का परिचय देना जरूरी मालूम होता है। सन् ७७६ ई० में इब्राहीम बिन जनदब ने सब से पहले आकाश के चमत्कारों के निरीक्षण (मुशाहिदात) के लिए दूरबीन का आविष्कार किया। दुन्या का पहला खगोल शास्त्री अहमद बिन बख्तानी ने पृथ्वी की परिकरमा का सिद्धान्त (जमीन की गर्दिश का नजरिया) पेश किया था।

जाहर बनानी (८७७ ई० मृत्व) ने सूर्य की धरी का झुकाव २३ १/२ अंश की जगह २३ अंश ३५ मिनट की खोज की थी। अहमद क़सीर अलगरगानी (मत्व ६०३ ई०) ने अपने तरीके से पृथ्वी के व्यास की ऐमाइश (मापन) की थी जो वास्तविक गणना के बहुत निकट है।

इब्ने यूनुस सूफी (देहान्त १०३७ ई०) ने अपनी पुस्तक "अलशफा" में गति का सिद्धान्त (ला आफ मोशन) बयान किया है। इस सिद्धान्त को यूरोप ने बूअलीसीन के ५०० वर्ष बाद न्यूटन के आविष्कार के रूप में सारी दुन्या में मशहूर कर दिया खगोल शास्त्री अबुल वफा बूज जानी (देहान्त १०११ ई०) ने साबित किया था सूर्य में आकर्षण है और चांद भी गतिशील है। उसने यह भी बताया कि चांद पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है और सूर्य के आकर्षण से उस की चाल मे बाधा पड़ती है इस को चांद का घटना बढ़ना कहा जाता है। इसको १६वीं सदी के वैज्ञानिक टाईकोबाराही (Tycobrahi) से जोड़ दिया गया।

भूगोल वैज्ञानिक अबूरैहान अलबेरूनी ने पृथ्वी के व्यास का मापन (पैमाइश) किया था।

अलबेरूनी ने सूर्य के निरीक्षण के बाद अक्षांश व देशांतर मालूम करने का तरीका ईजाद किया। अलबेरूनी ने

पृथ्वी को अपनी धुरी पर घूमने का भी निर्माण किया था।

अमर खय्याम, (जिसे लोग दार्शनिक या फलसफी और कवि की हैसियत से ही जानते हैं लेकिन उसे भौतिक विज्ञान के विशेषज्ञ होने की हैसियत से कम ही लोग जानते हैं) ने सौर्य वर्ष (शमसी साल) की जोगणना की वह वर्तमान विद्वानों के अनुसन्धान (तहकीक) से पूरी तरह समानता रखती है केवल ४८ सेकेण्ड का अन्तर ही मिलता है। खय्याम ने सौर्य वर्ष ३६५ दिन ५ घंटे ४८ मिनट का हिसाब किया और वर्तमान अनुसंधान से ३६५ दिन ५ घंटे ४६ मिनट और ४८ सेकेण्ड होता है।

मुहम्मद बिन इदरीसी दुन्या का सबसे पहला महान भूगोल विशेषज्ञ है जिस ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "नजहतुल मुश्ताकफी इहतिराकुल आफाक" में पहली बार दुन्या के गोल होने की बात लिखी थी।

अब्दुर्रहमान खाज़नी ने पता लगाया कि जिस चीज का वजन भूपटल पर जितना होता है वह हवा में उस से कम हो जाता है। इसी प्रकार हर चीज का भार पानी में कम हो जाता है। उस ने यह भी बताया कि पृथ्वी के चारों ओर हवा का आवरण (गिलाफ) इस लिए है कि जमीन उसको अपनी तरफ खींचती है। चुनानचि जमीन से जितना ऊपर होते जाते हैं हवा कम होती जाती है।

कजदीनी (देहान्त – १२८३) ने पृथ्वी के अपनी धुरी पर सूर्य के चारों तरफ घूमने और उसके कारण मौसम के बदलने की बात कही है।

इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी भी खोजें हैं जिसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि हमारे सामने नहीं है लेकिन वह यूरोप के खगोल शास्त्रियों से उसे जोड़ दिया गया। आवश्यकता इस बात की है कि इन की खोज की जाए और इस को प्रमाण के साथ दुन्या के सामने रखा जाए ताकि इन महान विशेषज्ञों को उनका उचित स्थान मिल सके।

(रोजनामा राष्ट्रीय सहारा से साभार)

फूड फोबिया

यह जानकर आपको हैरानी होगी लेकिन यह सच है कि एक व्यक्ति सिवाय पनीर के कुछ नहीं खाता और वह यही खाकर जीवित है।

इंग्लैण्ड के वायटन नामक शहर में रह रहे २७ वर्षीय डेवननले को फूड फोबिया है। कुछ भी गर्म भोजन की गंध लगने से डेव का गला सख्त और शरीर पसीने–पसीने हो जाता है। फूड फोबिया के चलते वह बचपन से लेकर आज तक सिर्फ पनीर खाने को मजबूर है।

खुद डेव के अनुसार यदि वे कुछ बदल सकते तो सर्वप्रथम अपनी इस कमजोरी को बदलना चाहते हैं। उसकी लंबाई ६ फीट १ इंच है। जबकि कमर का आकार ३६ इंच है। डेव दो बच्चों के पिता हैं तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ हैं। डाक्टरों को इतने सालों से खाली पनीर खाकर उसके स्वस्थ रहने पर आश्चर्य है, लेकिन उनका मानना है कि एक ही चीज सालों से लगातार खाते रहने से उसका तंत्रिका तंत्र काम करना बन्द कर सकता है। (गृहीत)

एक्टर कुत्ता

चीन के शांक्सी प्रांत की राजधानी झियांग में एक महिला का दावा है कि उसका कुत्ता न सिर्फ उसकी मोबाइल रिंगटोन की तरह गाता है बल्कि मरने की ऐक्टिंग भी खूबसूरती से कर लेता है। श्रीमती झांग का दावा है कि उसके पालतू कुत्ते डेगडेस को यह आदत पिछले एक साल से पड़ी है।

झांग के अनुसार उसकी मोबाइल रिंगटोन बजने पर उसका कुत्ता भी उसी धुन में आवाज निकालने लगता है और जैसे ही वह फोन सुनती है, कुत्ता भी गाना बन्द कर देता है। झांग के अनुसार रिंगटोन की आवाज निकालने वाला उसका कुत्ता पूरा आनन्द लेता है।

उसका कुत्ता इतना समझदार है कि मरने की ऐक्टिंग भी अच्छी तरह कर लेता है। हाथ को पिस्तौल के आकार में मोड़कर उसकी तरफ दिखाया जाए तो वह आधे घंटे तक मरे हुए कुत्ते की भांति जमीन पर चुप–चाप पड़ा रहता है। (गृहीत)

लैलतुल क़द्र : लैलतुलकद्र की बड़ी फज़ीलत है, पूरी रात हजार महीनों से बेहतर बताई गई है, हिसाब लगाने से अन्दाजा होता है कि इस रात की इबादत का सवाब लगभग ६,०,००० गुना बढ़ा दिया जाता है तो कितना महरूम है वह शख्स जो इस रात में नेकियां न करे। लोगों ने अन्दाजा लगा कर इस रात की तअईन की है, वरना अल्लाह तआला ने इस रात को जाहिर नहीं किया, बअज़ रिवायात से इशारा मिलता है कि रात को आखिरी दहाई की ताक रातों में ढूंढना चाहिए।

आतंकवाद पर काबू पाने के लिए

इस्लाम को ठीक से समझने–समझाने की ज़रूरत

राम पुनियानी

मेरे एक मित्र का बेटा अमेरिका में रहकर पढ़ रहा था। उसका नाम मुरली है और वह एक प्रतिभावान इंजीनियर है। मुरली का अर्थ होता है बांसुरी। परन्तु मेरे दोस्त के बेटे मुरली को अपने नाम के कारण बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ा।

अमेरिकी सुरक्षा एजेंसियों को शक हो गया कि 'मुरली' दरअसल मुसलमान है और उसका अस्ली नाम मुर अली है। बस फिर क्या था? मुरली को इतना परेशान किया गया कि वह अपने घर लौट आया और आज भी अमेरिकी सुरक्षा एजेंसियों की लानत मलामत करता रहता है। मुरली के साथ जो कुछ हुआ वह अमेरिका में रह रहे मुस्लिम युवकों के साथ रोजाना होता रहता है।

न्यूयार्क के डब्ल्यू०टी०ओ० टावर पर हमले के बाद से मुसलमानों को खलनायक के रूप में प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ी है। इस्लाम के होते दानवीकरण की प्रक्रिया की शुरूआत तब हुई थी, जब एक ओर सोवियत संघ बिखर रहा था व दूसरी ओर ईरान में अमेरिका के पिट्ठू रजा शाह पहलवी को जनक्रांति के जरिये अपदस्त कर अयातुल्लाह खुमैनी सत्ता पर काबिज होने की राह पर थे। इसके पहले तक साम्यवाद को दुनिया के लिए खतरा बताया जाता था। यह प्रचार अनवरत पूरे जोर–शोर से जारी रहा और नतीजा यह है कि आज अमेरिका में यदि आपका नाम या चेहरा आपके मुसलमान होने का शक तक पैदा करता है तो सुरक्षा एजेंसियां आपके पीछे लग जाएंगी। सड़क पर चलने वाला आदमी आपसे हाथ मिलाने तक में घबराएगा कि कहीं ऐसा न हो कि आप अपने शरीर में कहीं कोई बम छुपाये हों।

डब्ल्यू टी ओ पर हमला के तुरन्त बाद अमेरिका में एक सिख को मुसलमान होने के नाते मार डाला गया। अनेक यूरोपीय देशों में मुसलमानों को आतंकित किया जा रहा है। स्थिति यहा तक बिगड़ गयी कि सरकारों को इस प्रवृत्ति के खिलाफ कदम उठाने पर मजबूर होना पड़ रहा है। मुसलमानों के बारे में भद्दे चुटकुले सुनाये जाते है और इस्लाम को एक ऐसे धर्म के रूप में प्रचारित किया जार रहा है जो हिसा और घृणा की शिक्षा देता है। मुसलमानों को घोर असहिष्णु कट्टरवादी बताया जाता है। हर व्यक्ति आपको यह बताएगा कि किस तरह इस्लाम काफिरों को कत्ल करने की शिक्षा देता है, किस तरह जिहाद, इस्लामिक शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग है और किस तरह जिहादी, इस्लाम के सिपाही हैं।

हमारे देश में मुसलमानों के खिलाफ आरोपों की लबी सूची है। कहा जाता है कि मुसलमान बादशाहों ने हिन्दुओं को अपमानित करने के लिए मंदिरो को तोड़ा। कहा जाता है कि हर मुसलमान की चार बीवियां और बीस बच्चे होते हैं। कहा जाता है कि हर आतंकवादी मुसलमान है।

यह भी सच है कि आतंकवादी हिंसा की हालिया कुछ वारदातों में मुसलमानों के शामिल होने से कुछ राजनैतिक शक्तियों को अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए पूरे पुलिस समुदाय को बदनाम करने का मौका मिल गया है। धर्म और संस्कृति के घालमेल का उपयोग एक धर्म को दूसरे धर्म का विरोधी बतलाने के लिए किया जा रहा है। धर्म के नाम पर सत्ता पाने की कोशिशें की जा रही हैं। भ्रम फैलाकर मुसलमानों के खिलाफ हिंसा को उचित ठहराया जा रहा है।

इससे समाज सांप्रदायिक आधार पर विभाजित हो रहा है तथा मुस्लिम समुदाय के भीतर भी डर व्याप्त हो गया है। मुसलमान अपने आपको असुरक्षित महसूस करते हैं। अगर यह मान भी लिया जाए कि मुसलमान धीरे–धीरे अपने प्रति घृणा और अलगाव के आदी हो जाएंगे, तब भी प्रश्न यह है कि क्या इस माहौल में प्रजातंत्र सुरक्षित रह सकेगा? यह सच है कि इस माहौल से साम्राज्यवादी ताकतों के राजनैतिक लक्ष्य और उद्देश्य की प्रगति में रूकावट आना स्वाभाविक है। दोनों समुदायों के बीच की गहरी होती खाई से प्रजातंत्र कमजोर हो रहा है और प्रगति की गति धीमी हो रही है। इससे समाज का कमजोर वर्ग प्रभावित

(शेष पृष्ठ १५ पर)

घर में मौत हो जाने पर

इदारा

जब ऐसा लगे कि आदमी का आख़िरी वक़्त है तो उस को चित लिटा कर सिर ऊंचा कर दो और पैर क़िब्ला की तरफ़ कर दो इस तरह चेहरा क़िब्ला रूख़ हो जाएगा ऐसी सूरत में पैर क़िब्ला की तरफ़ करने में कराहत न होगी। फिर उस के पास बैठकर ज़ोर ज़ोर से, अच्छी लगने वाली आवाज़ से कल्मा पढ़ो, हो सकता उस के होश हवास हो और उसकी ज़बान चले और वह भी कल्मा पढ़ ले, मगर उस से कल्मा पढ़ने को मत कहो। अगर वह नमाज़ रोज़े का पाबन्द था तो बीमारी की तक्लीफ़ या बेहोशी के सबब आख़िर वक़्त कलमा ज़बान पर नहीं आया तो कोई हरज नहीं, अलबत्ता अपने होश हवास में ख़ुदा न करे कोई कुफ़्र या शिर्क का काम कर गुज़रा और तौबा न कि फिर आख़िर वक़्त भी कल्मा न पढ़ा तो यह ख़तरनाक बात है अल्लाह तआला मग़फ़ूज़ फ़रमाएं। लेकिन नेक आदमी की भी कोशिश यही होना चाहिए कि आखिर वक्त जबान पर कलमा हो। मरने वाले के पास सूर–ए–यासीन पढ़ने से रूह आसानी से निकलती है लिहाज़ा मरने वाले के करीब बैठकर अच्छी आवाज़ से सूर–ए–यासीन पढ़ना चाहिए।

उस वक़्त उस के पास ऐसी बात न की जाए। जिस से उस की तबीअ़त दुन्या की तरफ माइल हो। बीवी बच्चे सामने आएं तो कल्मा, अल्लाह का ज़िक्र, दुरूद शरीफ़ वगैरह पढ़ते हुए आएं ताकि मरने वाले को अल्लाह याद आए। तबीअ़तें अलग अलग होती हैं किसी की रूह अपने अ़ज़ीज़ों की मौजूदगी में हंसते मुस्कुराते निकल जाती है और किसी को अ़ज़ीज़ों की जुदाई तकलीफ़ पहुंचाती है इस लिये बअ़ज़ बुज़ुर्गों ने आख़िर वक़्त बाल बच्चों को सामने लाने से रोका है, लेकिन बड़ा नाज़ुक मसअला होता है। मेरे वालिद साहिब के आख़िरी वक़्त में उनके एक हिन्दू दोस्त ने हम लोगों को इकट्ठा करके वालिद साहिब से पूछा कि इन को क्या कहते हैं। वालिद साहिब के मुंह से साफ़ साफ़ निकला अल्लाह के हवाले किया।

जब रूह निकल जाए तो सब अ़ज़्व (अंग) ठीक कर दो, किसी कपड़े से उस का मुंह ठोड़ी के नीचे से कपड़ा लगा कर सर पर बांध दो ताकि मुंह फैला न रहे। दोनों आंखें बंद कर दो, पैर के दोनों अंगूठे मिलाकर बांध दो ताकि टांगे फैलने न पाएं, फिर कोई चादर उढ़ा दो। फिर नहलाने और कफ़नाने में जल्दी करो मुंह बन्द करते वक़्त, आंखों बन्द करते वक़्त बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाह पढ़ो उस के पास लोबान या अगर बत्ती वगैरह ख़ुशबू सुलगा दो।

जिस को ग़ुस्ल की हाजत हो वह जनाज़े के क़रीब न रहे। मरने के बअ़द से जब तक नहला न लें जनाज़े के पास तिलावत न करें अलग हट कर या मस्जिद में तिलावत करें।

अक्सर ऐसा होता है कि तद्फीन में शिरकत के लिए आए हुए लोग इन्तिज़ार में बैठ कर इधर उधर की बाते करते हैं, अच्छा मौक़ा है कि कोई साहिब ज़बानी या किताब से कुछ दीनी बातें पेश करें।

(पृष्ठ १४ का शेष)

हो रहा है।

अर्थ व्यवस्था पर भी बुरा असर पड़ रहा है और मानवीय मूल्यों की स्वीकार्यता घट रही है। इस अंधियारे को जल्दी से जल्दी दूर करना आवश्यक है। दक्षिणपंथियों की बढ़ती ताकतें प्रजातांत्रिक और प्रगतिशील उदारवादी तत्वों के लिए चेतावनी है कि यदि इस्लाम के प्रति बढ़ती घृणा को नियंत्रित नहीं किया गया तो आतंकवाद पर काबू पाना संभव नहीं होगा। आतंकवाद का कारण इस्लाम या मुसलमान नहीं है। सच तो यह है कि निहित स्वार्थी तत्वों की राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए इस्लाम का दानवीकरण किया जा रहा है।

इसलिए हमें अंतर्सामुदायिक रिश्तो को मजबूती देनी होगी। हमें सद्भाव और शांति के संदेश को फैलाना होगा। हमें धर्मों को नैतिक मूल्यों के संकलन के रूप में देखना होगा, न कि कर्मकांडों और बाहरी दिखावों के। हमें मानवता का संदेश फैलाकर उन ताकतों को बेनकाब करना होगा, जो अपने हित के लिए पूरी दुनिया के संसाधनों पर येन–केन–प्रकारेण कब्जा जमाना चाहते हैं।

(कान्ति से गृहीत)

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : आदमी के झूठे का क्या हुक्म है?

उत्तर : आदमी का जूठा पाक है मर्द हो या औरत, बच्चा हो या बूढ़ा, मुस्लिम हो या गैर मुस्लिम बशर्ते कि उस के मुंह में नजासत न लगी हो जैसे क़ै, या शराब वग़ैरह न वह जूठी चीज़ खुद नजिस हो।

प्रश्न : कुत्ता अगर किसी बर्तन में मुंह डाल दे तो उसे कैसे पाक करें ?

उत्तर : बर्तन को तीन बार ठीक से धो दें पाक हो जाएगा चाहे बर्तन कच्चा हो या पक्का लेकिन अगर सात बार धोयें और आख़िरी बार मिट्टी से मांझ लें तो अच्छा है।

प्रश्न : सुअर के जूठे का क्या हुक्म है?

उत्तर : सुअर मुकम्मल (पूर्णतया) नजिस है उसकी हर चीज नजिस है उसका जूठा नजिस है।

प्रश्न : जंगली दरिन्दों (हिंसक पशुओं) शेर चीता, भेड़ियां, बन्दर, गीदड़ वग़ैरह के जूठे का क्या हुक्म है?

उत्तर : इन सभी जानवरों का जूठा नापाक है?

प्रश्न : बिल्ली के जूठे का क्या हुक्म है?

उत्तर : बिल्ली का जूठा मक्रूह है लेकिन बिल्ली के जूठे पानी से वुज़ू उसी वक़्त करें जब दूसरा पाक पानी मौजूद न हो, दूसरा पाक पानी मौजूद हो तो बिल्ली के जूठे पानी से वुज़ू ना करें।

प्रश्न : ग़ुस्ल में कितने फ़र्ज़ हैं ?

उत्तर : ग़ुस्ल में तीन फ़र्ज़ हैं – ग़रारे के साथ कुल्ली करना, जब कि रोज़े की हालत में न हों, रोज़े की हालत में ग़रारे के बिना कुल्ली करे। नाक में ठीक से पानी पहुंचाना नर्म गोशे तक। सारे बदन पर पानी बहाना। अगर बाल बराबर भी कोई जगह सूखी रह गई तो ग़ुस्ल न होगा औरत के बाल अगर खुले हैं तो एक एक बाल को जड़ तक भिगोना जरूरी है, लेकिन अगर बाल गुंधे हैं तो सारे बाल भिगोना जरूरी नहीं अलबत्ता हर बाल की जड़ भिगोना जरूरी है। नाखून या होंटोंपर ऐसी लाली लगी है कि उस के नीचे पानी नहीं पहुंचता तो लाली छुड़ाए बिना ना ग़ुस्ल होगा ना ही वुज़ू औरतें ख़ूब समझ लें।

प्रश्न : हमारे इलाक़े में बिदअ़त बहुत है। लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से महब्बत का दअ़वा तो करते हैं। उठते बैठते या रसूलल्लाह कहते हैं; मगर नमाज़ नहीं पढ़ते, अलबत्ता मीलाद घर घर होता है। ग्यारहवीं, बारा वफ़ात, शब बरात, मुहर्रम, घूम घाम से मनाते हैं, हर त्योहार में फातिहे का बड़ा रिवाज है, इन सारे कामों में औरत मर्द बूढ़े बच्चे सब शरीक होते हैं लेकिन नमाज़ कोई कोई पढ़ता है यहां दीन की इशाअ़त का काम कैसे किया जाए?

उत्तर : पहली बात तो यह कि दीन की इशाअ़त का काम करने वाले के लिए दीन का इल्म ज़रूरी है। हिकमत के तहत यहां जैसे लोग हों उनका लिहाज़ रखते हुए अच्छे ढंग से बात चीत करना चाहिए । जो लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से महब्बत का दअ़वा करते हैं उनके जज़्बे की क़द्र करते हुए महब्बत के तक़ाज़े सामने लाना चाहिए और यह वाज़ेह करना चाहिए कि इताअ़त के बिना महब्बत साबित नहीं हो सकते। यह बताया जाए कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से महब्बत करने वाला नमाज़ तो छोड़ ही नहीं सकता। फिर हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की महब्बत के ज़रीअे हर बिदअ़त से नफरत और हर सुन्नत से महब्बत की दअ़वत दी जाए और अल्लाह तआ़ला से अपने लिये और उनके लिए दुआ की जाए। बेशक क़ुलूब को हिदायत देना अल्लाह ही के इख्तियार में है।

प्रश्न : लोग आमतौर से जकात रमजान ही में अदा करते हैं जब कि जकात वाले माल पर जिस माह में भी साल पूरा हो जाये अदा करना चाहिए।

उत्तर : बेहतर यही है कि ज़कात निकालने का कोई महीना मुकर्रर कर लिया जाए और उसी माह हिसाब करके ज़कात अदा कर दी जाए दर्मियान साल माल कुछ घट गया या बढ़ गया इस की परवाह न की जाए।

चूंकि रमज़ानुल मुबारक में हर नेकी का सवाब बहुत बढ़ा कर मिलता है और फ़राइज़ का सवाब सत्तर गुना बढ़ा कर मिलता है इस लिए आम तौर से लोगों ने अपनी जकात के हिसाब के लिए रमजान का महीना मुकर्रर कर रखा है और यह बहुत अच्छा है।

दुनिया–ए–इस्लाम के सबसे बड़े कारी :

शैख अब्दुल बासित (रह०)

मु० आरिफ

मिस्र के कारी शैख अब्दुल बासित अब्दुल समद (रह०) के व्यक्तित्व से दुनिया –ए – इस्लाम में कौन परिचित नहीं । उन्हें लोग बुलबुले–मिस्र के नाम से भी जाने जाते थे। वो मिस्र के राज्य "कैना" में एक गांव में सन् १९२६ में पैदा हुए।

उन्होंने बचपन ही में १० वर्ष की उम्र में पूरा कुर्आन पाक याद कर लिया था। शेख मोहम्मद सलीम जमाद से उन्होंने किरअते–सबा की शिक्षा प्राप्त की।

उनकी आवाज में एक तरह का जादू था जब भी वे कुर्आन शरीफ की तिलावत करते थे तो लोग रोने लगते। उनकी आवाज शहद की मिठास, नगमें का तरन्नुम और बादलों की गरज थी।

एक इन्टरव्यू में उन्होंने बताया कि कुर्आन दुनिया भर के मुसलमानों के बीच एकता का सबसे बड़ा सन्देश हैं और मैंने लगभग विश्व भर के सभी देशों की यात्राएं की हैं और अफ्रीका के १४ राज्यों में कुर्आन पाक सुनाया है।

इन देशों के लोग अरबी जबान नहीं जानते और कुर्आन के रहस्यों उसके अन्दर छुपे खजानो को भी नहीं जानते मगर इसके बावजूद कुर्आन पाक के शब्दों की ध्वनों में ऐसा आकर्षण और प्रभाव है कि लोगों के दिलों में उतर जाता है।

कुर्आन शरीफ सुनाने के बदले में उन्हें बड़ी बड़ी पेशकश की गई मगर हर बार उन्होंने उसे यह कह कर ठुकरा दिया कि मैं इस दौलत के बदले में दुनिया की छोटी छोटी वस्तुओं को स्वीकार करके अल्लाह को क्या मुंह दिखाऊंगा। जब कारी सा० से पूछा गया कि २०–२१ वर्ष पूर्व आज के कुर्आन को सुनने वालों में आप कुछ अंतर पाते हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि इस्लाम के बारे में मुस्तशरीकीन कि फैलाई हुई भरम और धोखे की बातें। अब लगभग समाप्त हो चुकी हैं इसी तरह वैज्ञानिक आविष्कारों का जादू भी अब टूटता जा रहा है। लोग अब समझ गए हैं कि धर्म और विज्ञान एक दूसरे के विरूद्ध नहीं बल्कि साथ–साथ चल सकते हैं। इस लिए दुनिया–ए–इस्लाम में यह एक अच्छा मोड़ आया है कि लोग अब अपने धर्म और अपने मालिक की तरफ लौट रहे हैं जो बहुत अच्छी बात है।

वो कहा करते थे कि मेरे दो काम ऐसे हैं कि मैं पूरी जिन्दगी उन पर गर्व करता रहूंगा कि मेरे हाथ पर अब तक पचास गैर मुस्लिमों ने इस्लाम कबूल किया है दूसरा यह कि मैंने पूरा कुर्आन पाक दो बार रिकार्ड कराया है। और आखिर में कहा कि मेरी आखिरत के लिए भी यही कुल पूंजी है।

कारी सा० दुनिया के सबसे बड़े कारी थे लेकिन स्वयं उनको शेख अब्दुल फत्ताह मरहूम शेख सिद्दीक मंशावी और मुस्तफा इस्माईल का कुर्आन पढ़ना बहुत अच्छा लगता था।

२० नवम्बर १९८८ बुधवार की शाम दुनिया के इस महानतम् कारी की आवाज हमेशा के लिए बंद हो गई – (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन)

ऐ मेरे माहे सियाम

रूबाब रशीदी

तू जहाने आगही
तू वकारे बन्दगी
तू शिआरे जिन्दगी
रौशनी ही रौशनी
हर तरफ फैली हुई
ऐ मेरे माहे सियाम
ऐ मेरे माहे सियाम

क्या मिजाजे सुब्हो शाम
कैसा पाकीजा निजाम
एक जैसे खासो आम
खलवतों का इहतिमाम
जलवतों का इन्तिजाम
ऐ मेरे माहे सियाम
ऐ मेरे माहे सियाम

तू कि मिअयारे हयात
तू कि किरदारे हयात
तू कि इज्हारे हयात
तू कि अनवारें हयात
तू कि मिअमारे हयात
ऐ मेरे माहे सियाम
ऐ मेरे माहे सियाम

तेरी सारी साअतें
जिन से क्या क्या निस्बतें
जिन से क्या क्या कुरबतें
निअमतें ही निअमतें
रहमतें ही रहमतें
ऐ मेरे माहे सियाम
ऐ मेरे माहे सियाम

तजकियए नफ्स का
ले के पैगामें बका
साथ अपने आ गया
रूह को चमका गया
हर नफ्स है पुर जिया
ऐ मेरे माहे सियाम
ऐ मेरे माहे सियाम

समय का एहसास

बिलाल अब्दुलहयी हसनी नदवी

एक मशहूर कहानी है कि एक आदमी को कहीं से एक बहुमूल्य मोती हाथ आगया। वह जौहरी के पास गया तो उसने कहा कि इसकी असल कीमत उस समय मिलेगी जब इस में छेद कर दिया जाए लेकिन यह नाजुक काम है और इसकी भारी मजदूरी देनी पड़ेगी। वह आदमी मोती की कीमत जान चुका था मजदूरी देने के लिए तैयार हो गया। जौहरी को अपने घर लाया बातों बातों में उस से पूछा कि तुम्हें गाना भी आता है। जौहरी ने कहा हां। उस ने कहा सुनाओ। उसने गाना शुरू कर दिया और इसी में शाम हो गई जौहरी ने कहा हमारी मजदूरी का समय पूरा हो गया। उसने कहा मजदूरी कैसी अभी तो तुमने मोती छुआ भी नहीं। उसने कहा कीमत समय की होती है और समय में दे चुका अब उस की कीमकत तुम्हें अदा करनी होगी। चारो नाचार यह भुगतान उस को करना पड़ा। मोती की कीमत का अन्दाजा तो उसने कर लिया था लेकिन समय की कीमत का एहसास उस को नहीं था।

आज हमारा सबसे बड़ा रोग यही है कि हमें समय की कीमत का एहसास नहीं। दुन्या तेजी से आगे बढ़ रही है उसका अनुमान भी पहले सम्भव नहीं था परन्तु वर्तमान साधनों ने सब कुछ दिखा दिया है। दुःख की बात यह है कि इन साधनों का प्रयोग वह लोग कर रहे हैं जो दुन्या को तबाही के द्वार पर खड़ा कर देना चाहते हैं और जिस उम्मत को दुन्या के नेतृत्व के लिए पैदा किया गया था आज वह खालीी हाथ है।

यह सच है कि बाज मर्तबा एक क्षण की गलती से इंसान सदियों पीछे चला जाता है । बुद्धिमान वह है जो बीते समय से सबक ले और पूरे संकल्प और उत्साह के साथ भविष्य की यात्रा जारी रखे एक एक क्षण का हिसाब ले और समय को कीमती से कीमतीतर बनाने की कोशिश करे।

अल्लाह तआला ने सूरः अलअस्र में आम तौर पर इंसान की हानि का वर्णन किया है और जमाने की कसम खाकर फरमाया है जिससे साफ पता चलता है कि यह जमाना जो इंसान को मिला यह उस के लिए एक महान चीज है। उसका सही प्रयोग करने वाले कहीं से कहीं पहुंच जाते हैं और जो इससे गाफिल रहते हैं वह अपना बहुत ही नुक्सान करते हैं। सबसे अधिक जिस कौम को इसका एहसास होना चाहिए वह कौम मुस्लिम है लेकिन समाज को देख कर अनदाजा होता है कि शायद मुसलमानों में इस का एहसास सबसे कम है। दूसरी कौमें अपने अपने उद्देश्य की प्राप्ति में जीजान से लगी हुई हैं। उनके उद्देश्य कुछ भी हों लेकिन मुसलमान जिनके सामने एक महान उद्देश्य है उनको यह ख्याल नहीं होता कि समय बीतता चला जा रहा है लेकिन कोई उचित परिवर्तन दिखाई नहीं देता। दशा सुधरने के बजाय खराब होती चली जा रही है।

यह एक सामान्य समीक्षा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस अन्धेरी रात में कहीं कहीं चिराग भी जल रहा है लेकिन इस अन्धकारपूर्ण माहौल के लिए वह काफी नहीं है। इस लौ को तेज करने की जरूरत है, जबकि दूसरी तरफ इन चिरागों को बुझाने के लिए हवाओं के थपेड़े भी हैं।

ईमान के इन शोलों को रौशन करने के लिए और इसके प्रकाश को तेज करने के लिए और अन्य दीपों को जलाने के लिए बड़े पैमाने पर तेल बत्ती की जरूरत है। यह प्रकाश और अन्धकार का संघर्ष है अन्धकार पूरी तरह डेरा डालने की तैयारी में है। ऐसी सूरत में ईमान रखने वाले एक एक व्यक्ति की जिम्मेदारी है संयुक्त रूप में भी और व्यक्तिगत रूप में भी कि वह समय की कीमत पहचाने और एक क्षण को नष्ट होने से बचाने की कोशिश करे जो क्षमताएं अल्लाह की दी हुई हैं वह सही दिशा में लग जाएंगी तो ईमान की लौ में तेजी आएगी और अन्धकार से मुकाबला उतना ही आसान होता चला जाएगा।

समय के आदर का एक सामान्य लाभ व्यक्तिगत रूप से यदि गौर किया जाए तो अन्दाजा होता है कि एक एक व्यक्ति के लिए समय की क्या कीमत है। और किस तरह उस को नष्ट किया जा रहा है। मन में यह विचार पैदा होता है कि अगर इस समय यह काम न हुआ तो क्या है आगे और भी समय है लेकिन यह खयाल नहीं होता कि दोनों समय अलग अलग हैं और दोनों

की अपनी जगह कीमत है। जो समय बीत गया वह हाथ नहीं आता। यदि उस को बरबाद किया गया तो वह हाथ से गया। लाख जतन कर लिये जायें गया वक्त हाथ नहीं आ सकता। इसीलिए इस्लाम की खूबी यह बयान की गई है कि मुसलमान बेकार और व्यर्थ चीजों को हाथ नहीं लगाए इस लिए कि उस को समय का कीमत बतायी गयी है। उस को कीमती बनाने के साधन भी बताए गये हैं।

यह अपनी जगह सत्य है कि निकटतम होने के बावजूद इंसान उस को महसूस कर सकता है लेकिन उसको देख नहीं सकता। इस का नतीजा यह है कि वह समय को सही नहीं व्यतीत कर सकता है बल्कि समय उसको गुजार देता है और आमतौर पर इंसान धोखा खा सकता है दिन के चौबीस घंटों का अगर हिसाब लगाया जाए तो अन्दाजा यह होता है कि क्या खोया और क्या पाया। जैसे कि एक व्यापारी हिसाब लगाता है कि असल पूंजी लगाने के बाद उसको क्या मिला। यही हिसाब समय के बारे में लगाया जा सकता है तो आदमी उस में तो धोखा खाता है। एक हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "दो नेअमतें (सुख सामग्री) ऐसी हैं जिस में साधारणतः पर लोग गबन का शिकार हो जाते हैं। एक स्वास्थ दूसरे फरागत इंसान यदि समय का पहले से लेखा जोखा नहीं करता तो समय उसको इधर उधर के कामों में व्यस्त कर देता है उसको लाभप्रद कामों के लिए छुट्टी नहीं मिलती। इस के लिए बड़े ध्यान चेतना की जरूरत है अन्यथा यह काई की तरह है जरा भी ध्यान हटा और पांव फिसला। इसी प्रकार स्वास्थ भी अल्लाह की नेअमत है। यदि इंसान ने सोचा कि अभी तो स्वस्थ हूं आगे काम पूरा कर लिया जायेगा तो यही धोखा है। प्रथम तो जिन्दगी का क्या भरोसा फिर स्वास्थ अभी थोड़ा देर के बाद क्या होने वाला है सिवा खुदा के कौन जान सकता है। निःसन्देह यह बहुत गौर करने की चीज है कि अल्लाह तआला ने क्या नेअमत प्रदान की है। और किस प्रकार उसको नष्ट किया जा रहा है। इस की मिसाल चेक या ड्राफ्ट से दी जा सकती है। अगर इस को कैश न कराया जाए और तारीख निकल जाए तो इस की हैसियत रद्दी कागज की है। अगर इस की कीमत का इहसास हो जाए तो व्यक्तिगत रूप से भी इसका अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है और संयुक्त रूप से पूरा समुदाय इसका फायदा उठा सकता है लेकिन यह राह उसी के लिए है जो चिन्तन और मनन गौर व फिक्र की क्षमता रखते हैं।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आजमी

गठिया (Rhumatism) और उससे सम्बन्धित

इदारा

तमाम जिस्म के जोड़ों, खास तौर से पैर के गट्टों और कुहनियों के जोड़ में सख्त दर्द होता है तो इस को गठिया कहते हैं। यह दर्द कभी सख्त तो कभी हल्का भी होता है। औरतों में जियादा होता है, अधिकतर जवानों में होता है।

कारण : नवीन अन्वेषण (जदीद तहकीक) के अनुसार इसका कारण एक पैरासाइट होता है, कभी पैतृक (मौरूसी) होता है, ठण्डी वस्तुओं के प्रयोग और ठन्ड में अधिक होता है।

पहचान : तेज बुखार, जोड़ों पर सूजन और जलन, कभी पूरे शरीर पर सूजन आ जाती है, दर्द कभी हाथों में कभी पैरों में कभी कांधों में होता है, बड़ी तक्लीफ और बेचैनी होती है।

इलाज : माजूने सूरनजान, या हब्बे सूरनजान या हब्बे असगन्द या असगन्दे नागोरी का सुफूफ (चूरा) ६ ग्राम, ४० दिन तक खाने से मरज ठीक हो जाता है, होम्यो पैथी में "काल्वीकम" अच्छी दवा है। लेकिन गठिया का इलाज किताब देख कर न करें किसी डाक्टर को दिखा लें और उसी से दवा तजवीज कराएं यहां तो एक तरह का पथ प्रदर्शन (रहनुमाई) किया जा रहा है।

निकरिस : यह दर्द छोटे–छोटे जोड़ो, खास तौर से उंगलियों के पोरों और पैर की उंगलियों के जोड़ों में होता है, यह मर्दों में जियादा होता है। यह दर्द अंगूठे के जोड़ों में अक्सर होता है। आम तौर से यह मरज पैतृक (मौरूसी) होता है और ३५ वर्ष की आयु के पश्चात होता है। इस मरज में बेनी मिड सुबह शाम खाने से फाइदा होता है लेकिन डाक्टर ही से इलाज कराना चाहिए और झोला छाप डाक्टरों से दूर रहना चाहिए।

इर्क़ुन्नसा अर्थात रेंगन का दर्द : यह बहुत ही तक्लीफ देने वाला दर्द है कूल्हे की हड्डी से आरंभ होकर टखनों तक जाता है। नेरूब्यान के टेब्लेट और इंजेक्शन अच्छा काम करते हैं। लेकिन इलाज अच्छे डाक्टर ही से कराना चाहिए। हम सिर्फ मालूमात दे रहे हैं। इस मरज में कभी आप्रेशन की जरूरत पड़ जाती है।

कैसे जुदा रहेगा वह

मतलूब अहमद नदवी

एक साहिब मौलवीना शक्ल व सूरत वाले एक मस्जिद में कह रहे थे: इन वहाबियों से दूर रहो इन लोगों ने बे दीनी फैला रखी है। इन से कोई तअल्लुक मत रखो, इन से रिश्ता नाता मत करो, इन को सलाम मत करो, इन के सलाम का जवाब मत दो, इन का ज़बीहा मत खाओ!

एक नव जवान बोल पड़ा : भाई साहिब वहाबी कौन लोग हैं जो बे दीनी फैला रहे हैं? उन्होंने जवाब दिया : यह तबलीग़ी जमाअत वाले वहाबी हैं, यह देव बन्द वाले वहाबी हैं यह नदवी लोग वहाबी हैं। हमारे मौलाना ने बता दिया है कि इन के कुफ़्र में जो शक करे वह भी काफ़िर है।

उस नव जवान ने जवाब दिया: लेकिन आप की बहन का दामाद तो नदवी है।

वह बोले : हां मेरी बहन ने उस की अच्छी हालत देखी शादी कर दी, अगर उस की गोद में बच्चा न होता तो मैं रिश्ता छुड़वा देता, फिर भी मैं बहन के नदवी दामाद से बोल चाल नहीं रखता हूं।

नवजवान बोला : हां मगर तुम्हारी बहन और भांजी उस नदवी को मुसलमान समझते हैं और आप अगर बहन और भांजी को मुसलमान समझते हैं, और आप के मौलाना आप को मुसलमान समझते हैं अब बताओ आप के मौलाना का फ़तवा कहा गया?

मैं उ[illegible] मौजूद था, मैंने नव जवान को [illegible] कि इस तरह बात नहीं करते और उन साहिब के पास जा कर बैठ गया, उन को भी बिठा लिया, यह देख कर कई लोग बैठ गये। मैंने उन साहिब के जज़्बे की तअरीफ़ की कि जो शख़्स बे दीनी फैलाए उस के ख़िलाफ़ यह जज़्बा होना ही चाहिए लेकिन ऐसी ग़लत फ़हमी भी तो हो सकती है कि जिस के बारे में समझा गया है कि वह बे दीनी फैला रहा है और वह दीन फैला रहा हो।

वह साहिब बोल पड़े जो हमारे हुज़ूर की तौहीन करे वह दीनदार कैसे हो सकता है? नदवे वाले हुज़ूर की तौहीन करते हैं, देव बन्द वाले हुज़ूर की तौहीन करते हैं इनके पीछे नमाज़ नहीं हो सकती।

मैंने कहा मियां ग़ुस्सा थूको हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तौहीन करने वाला इस्लाम से ख़ारिज है न उसकी नमाज़ न उसका रोज़ा लेकिन नदवा और देवबन्द और हुज़ूर की तौहीन? अस्तग़फ़िरूल्लाह आप बताइये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातें किन किताबों में है?

वह बाले : बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, तिर्मिजी शरीफ़, अबू दाऊ शरीफ़, इब्निमाजा शरीफ़ नसई शरीफ़ इन सब में हमारे हुज़ूर की बातें हैं, इनके अलावा भी और अहादीस शरीफ़ की किताबें हैं।

मैंने पूछा : क्या यह किताबें देव बन्द और नदवे में नहीं पढ़ाई जाती हैं?

वह बोले : सुना है पढ़ाई जाती हैं मगर मतलब दूसरी तरह बताया जाता है।

मैंने कहा : बुख़ारी व मुस्लिम समझने वाले को कोई दूसरी तरह मतलब बताएगा तो वह मान लेगा? फिर पुराने बुज़ुर्गों ने इन की शरहें लिखी हैं। क्या पढ़ने वाले उन के ख़िलाफ़ सुनेंगे तो बहस न करेंगे ऐसे ही मान लेंगे।

वह बोले : हम को तो अरबी आती नहीं हमारे मौलाना यही बताते हैं।

मैंने कहा : अच्छा छोड़ो इसे दूसरी तरह गौर करो, माशा अल्लाह तुम तो नमाज़ी हो क्या तुम्हारी नमाज़ और देव बन्दी या नदवी की नमाज में कोई फर्क है ?

वह बोले : नमाज़ तो हम सब एक ही तरह पढ़ते हैं ।

मैंने कहा : यह नमाज़ आप को कहां से मिली, कि फ़ज्र में दो सुन्नतें और दो फ़र्ज़ पढ़ते हो इसी तरह पांचो नमाजें ?

वह बोले : यह तो हम को हुज़ूर ही से मिली है।

मैंने पूछा : क्या नदवियों को कहीं और से मिली है? अगर नदवी, देवबन्दी मआज़ल्लाह सुम्म मआज़ल्लाह हज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तौहीन की सोचते तो नमाज़ क्यों पढ़ते, फिर नमाज़ में अस्सलाम अलैक अय्युनबीअु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू न पढ़ते, न

नमाज़ में दुरूद पढ़ते। वह बोले : यह बात तो आपकी ठीक है लेकिन देवबन्दियों ने अपनी किताबों में तौहीन लिखी है।

मैंने कहा : नहीं मेरे भाई यह सिर्फ़ समझ का फेर है, कुछ ग़लत फ़हमियां हुईं कुछ पैदा की गयीं। आप ग़ौर करें मआज़ल्लाह रूशदी और तस्लीमा नसरीन ने इहानत की क्या किसी देव बन्दी ने इन दोनों को तअ़रीफ़ की, क्या देव बन्दियों और नदवियों ने इन की मुखालिफत में मज़ामीन नहीं लिखे, तक़रीरें नहीं कीं? डिन्मार्क से कारटून का फ़ित्ना उठा क्या देवबन्दियों और नदवियों ने उस के खिलाफ़ आवाज़ नहीं उठाई?

अब वह साहिब ख़ामोश थे, मैंने कहा अभी आप का ज़ेहन साफ़ नहीं हुआ है, मगर मेरा मिशन मुसलमानों को मिलाना है, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अदना तौहीन करने वाले को मुसलमान नहीं समझता, लेकिन तौहीन न करने वाले पर तौहीन का इल्ज़ाम लगा कर ख़ुद को इस्लाम से महरूम हो जाने का ख़तरा नहीं मोल लेता, न कुफ़्र व शिर्क से राज़ी न बिदअ़त से समझौता, इम्कान भर अपने भाइयों की ग़लत फ़हमियां दूर करके बाहम मिलाना मेरा मिशन है और यह दअ़वत है :

तू बराए वस्ल करदन आम्दी
नै बराए फ़स्ल करदन आमदी

तू मिलाने आया है, लड़ाने नहीं आया है हमारे जिन भाईयों को गलत फहमियां हैं उन को समझाने की कोशिश करता रहूंगा, उन की बद अख्लाक़ियां और उनकी तकलीफ़ देने वाली बातें भी बरदाश्त करता रहूंगा लेकिन अपना मिशन न छोड़ सकूंगा। और यह शिअर दुहराता रहूंगा।

दाना तुझे है फिक्र क्या
आज नहीं तो कल सही
कैसे जुदा रहेगा वह
जिस से मिला रहेगा तू।

एक चिट्ठी

मुकर्रम एडीटर साहिब ! अस्सलाम अलैकुम वरहमतुल्लाहि वबरकातुहू।
मैं आप के माहनामा "सच्चा राही" का पुराना कारी हूं। अल्हम्दुलिल्लाह इस के जरीअे बहुत कुछ हासिल कर चुका हूं। दुन्यावी एअतिबार से भी और उखरवी एअतिबार से भी, उम्मीद है कि आइन्दा भी इसी तरह इस महबूब परचे से फाइदा उठाता रहूंगा। मेरी दिली ख्वाहिश है कि यह महबूब परचा सांगली और उसके अतराफ के हर कच्चे पक्के घर में पढ़ा जाए। मैं बराबर कोशिश कर रहा हूं और इस की तहरीक चला रहा हूं। कुछ लोग मुतवज्जेह हुए हैं। चार खरीदारों का चन्दा भेज रहा हूं। दुआ करता हूं कि अल्लाह तआ़ला इस परचे को नज़रे बद से महफ़ूज रखे। फ़क़त वस्सलाम, आप का शुक्रगुजार।
मूसा सय्यद हसन सय्यद – ११.७.२००७

उत्तर :

मुकर्रमी मूसा साहिब !
व अ़लैकुमुस्सलाम व रहमततुल्लाहि व बरकातुहू
आप की तवज्जुह का शुक्रिया, जज़ाकुमुल्लाह, तआ़ला।
आपका सच्चा राही तिजारती बुन्यादों पर नहीं चलाया जा रहा है। इस का मक़सद समाज सेवा, ख़ास तौर से मुस्लिम समाज सेवा है। हम बराबर "सच्चा राही" पढ़ने वालों से इस की इशाअ़त बढ़ाने में तआ़वुन की अपील करते रहे हैं और करते रहेंगे। अल्लाह तआ़ला अपने नेक बन्दों को इस तरफ़ ज़रूर मुतवज्जेह करेगा जैसे आप को और आप की तरह के दूसरे भाइयों को मुतवज्जेह फ़रमाया। अल्लाह तआ़ला हम सब की कोशिशें क़बूल फ़रमाए। सम्पादक

दूसरी चिट्ठी

बड़े शर्म की बात यह है कि पैसा भेजने के बाद भी आप दीन की पत्रिका भेजने में जी चुराते हैं अल्लाह आप को कभी माफ नहीं करेगा। लेटर में जवाब भेज देते हैं आप जानबूझ कर नहीं भेजते। आप लोगों की, एक नहीं कई लोगों ने शिकायत की हैं मैं एक रजि० मौलाना सलमान साहब को भेजकर आपकी करतूतों को उजागर कर दूंगा। आप जान कर परेशान कर रहे हैं क्यों न आप के ख़िलाफ़ मुकदमा लगाया जाये।
मेराजुद्दीन
भाई मेराजुद्दीन साहिब ! सलाम मसनून
आप की ख़फ़गी बजा है, हम दफ़तर को आगाह कर चुके हैं। मुझे उम्मीद है कि अब आप का ग़ुस्सा ख़त्म हो चुका होगा और परचा आपको पहुंच रहा होगा। सम्पादक

पुनर्जन्मः वास्तविकता या भ्रम

मौलाना मुहम्मद रफ़ीक क़ासिमी

कई सौ साल पुरानी बात है। एक व्यक्ति परलोक सिधारने लगा तो अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में उसने अपने पुत्रों को उपदेश दिया कि मेरे मृत्यु के पश्चात् मेरे शव को अग्नि में जला देना और अस्थियों को नदी में डाल देना, हवा में उड़ा देना और पर्वत पर बिखेर देना। उस व्यक्ति के इच्छानुसार उसकी मृत्यु के बाद ऐसा ही किया गया।

संसार के सृष्टिकर्ता ने जिसने मनुष्यों को पैदा किया है उस व्यक्ति के अवशेषों को जल, वायु और पर्वत से एकत्रित कराके फिर से मनुष्य के रूप में पुनर्जीवित किया और उसने पूछा, "तुमने, ऐसा करने के लिए अपने पुत्रों को क्यों कहा?" उस व्यक्ति ने उत्तर दियाः "हे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के सृष्टिकर्ता। मैंने अपने जीवन में अच्छे कर्म नहीं किये थे। आपकी आज्ञा का पालन नहीं किया था। इसलिए आपके दंड के भय से मैंने ऐसा उपाय सोचा।"

पैदा करने वाले की उसकी इस सादगी पर दया आ गयी और उस व्यक्ति को, जिसने अल्लाह के भय से ऐसा उपाय किया था क्षमा दे दी। और कहाः "मेरी शक्ति और अधिकार असीमित है।"

इस घटना से यह भली–भांति समझा जा सकता है कि मृत्यु के पश्चात् अपने कर्मों के आधार पर मनुष्य परलोक ही में सुख–दुख भोगने के लिए रखा जाता है। यह एक अटल सत्य है कि संसार का रचयिता न्याय प्रिय है। यह न तो किसी व्यक्ति के साथ अन्याय करता है और न ही अत्याचार की अनुमति देता है। इन मूल सिद्धांतों को अपनाते हुए जब मनुष्य इस संसारिक जीवन के बाद पारलौकिक जीवन के बारे में अध्ययन करता है तो उसका हृदय इस पर संतुष्ट हो जाता है कि पैदा करने वाला इन्सान को इस दुनिया में एक ही बार भेजता है और उसे शिक्षा–दीक्षा, ध्यान–ज्ञान की शक्ति प्रदान करता है। यदि कोई व्यक्ति इस अवसर का लाभ उठाता है और अपने जीवन में अच्छे–अच्छे कर्म करता है, तो उसे अपने प्रभु के पास सुखमय जीवन व्यतीत करने का अवसर मिलता है, और अगर अपने प्रभू की आज्ञा का उल्लंघन करता रहा तो उसे दुखों को भोगने के लिए बाध्य किया जाता है।

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जो बालक या बालिका अपने बचपन में ही मृत्यु के द्वार में प्रवेश कर जाते है, वे कहां जाते हैं और उनका परिणाम क्या होता है, क्योंकि उनको न तो सुकर्म करने का अवसर मिला ओर न ही कुकर्म।

यह समस्या भी लोगों को चिन्तित करती है कि धरती पर मनुष्य के आने के बाद जो लोग मृत्यु पा चुके हैं, वे क़ियामत तक किन–किन योनियों में भटकते रहेंगे? और जो लोग प्रलय के समीप मरेंगे, वे कहां होंगे? और उनको कितने और किन–किन योनियों में से होकर अन्तिम पड़ाव की ओर जाना होगा।

इसी प्रकार जिन मनुष्यों को भवि य में इस संसार में आने का अवसर प्राप्त होगा वे, अपने कर्मों के आधार पर कितनी योनियों में से गुज़रते हुए परलोक की ओर जाएंगी। यह इसलिए भी आश्चर्यजनक है कि अतीत और भविष्य के बीच जो फ़ासला है वह लाखों वर्षों का है। किसी को अनेक योनियों से गुजरते हुए और किसी को क्षणिक समय में उस परलोक की तरफ़ जाना हो, यह विधि–विधान के विपरीत ज्ञात होता है।

प्रश्न यह भी उठता है कि मनुष्य किन–किन योनियों से भटकता हुआ मनुष्य योनि में जन्म लेता है। इसी तरह अन्तिम योनि के पश्चात् वह कहां जाएगा इसलिए कि अगर सुकर्म–कुकर्म के आधार पर अनेक योनियों से होता हुआ यहां तक पहंचा है तो फिर मनुष्य के रूप में कर्म के आधार पर फिर किसी योनि में न जाना, न्याय और बुद्धि दोनों के विपरीत है।

यह भी विचार का विषय है कि अतीत में देखा यह गया और इतिहास भी इसका साक्षी है कि मनुष्यों की आबादी कम थीं, जबकि सुकर्म करने वालों की संख्या अधिक थी और पशुओं और पक्षियों और कीड़े–मकोड़े अधिक थें। हानो तो यह चाहिए कि मनुष्य ज़्यादा होते और पशु–पक्षी की संख्या कम। लेकिन वर्तमान स्थिति यह है कि मनुष्यों की संख्या बहुत अधिक और पशु–पक्षी कम। इस समस्या से मुक्ति पाने के लिए अंधविश्वास का मार्ग भी

सहायक नहीं बन रहा है। कभी–कभी यह घटता है कि कोई कन्या या बालक अपने पूर्वजन्म का विवरण विस्तार से बताता है। यहां यह प्रश्न फिर मनुष्य के मस्तिष्क को झिंझोड़े देता है कि मनुष्य का जन्म केवल एक ही बार इस संसार में होता है। जबकि वह बालक अपने पूर्व जन्म के बारे में विस्तार से बता रहा है। और वह भी निकट अतीत में अपने मनुष्य जीवन के बारे में, जबकि मनुष्य एक ही बार जन्म लेता है।

फिर यह प्रश्न भी उठता है कि कुकर्म के आधार पर उसे पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े के रूप में पैदा किया जाता है तो सुकर्म के आधार पर क्या?

इस प्रश्न का उत्तर ढूढ़ने में मनुष्य असमर्थ है कि अगर कहीं कोई घटना घटित होती है कि जो अपने पूर्व जन्म के बारे में बताता है तो यह केवल हिन्दू धर्म के अनुयायियों में ही क्यों होता है? जबकि पुनर्जन्म के आस्था के आधार पर हर मनुष्य के साथ यही घटना घटनी चाहिए। परन्तु हर व्यक्ति अपने अतीत के बारे में क्यों नहीं बताता और नहीं बता पाता।

इसी तरह दूसरे धर्मों के अनुयायी उदाहरणार्थ, इस्लाम धर्म के अनुयायियों में तथा ईसाई, यहूदी, सिख, पारसी, जैन, बौद्ध, बहाई में कोई ऐसा उदाहरण देखने को नहीं मिलता। जबकि सारे संसार का रचयिता एक है और उसका विधान और संविधान एक है, तो फिर यह अन्तर क्यों?

कहीं ऐसा तो नहीं है कि ईश्वरीय सिद्धांत एक ही हो और मनुष्यों ने अपने–अपने इच्छानुसार धर्म की रूपरेखा, विधि–विधान बना डाला हो। जिसकी पैदा करने वाले की ओर से कदापि अनुमति नहीं दी गयी है। अगर यह मान लिया जाए कि कुछ योनियों से ही होकर मनुष्य के रूप में मनुष्य जन्म लेता है, तो फिर प्रश्न यह उठ खड़ा होता है कि मनुष्य को दो महत्वपूर्ण विशेषताओं से सम्मानित किया गया है एक बुद्धि और दूसरा शिक्षा। इन्हीं दो विशेषताओं के आधार पर मनुष्य को इस पारलौकिक जीवन में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना होता है और इन्हीं दोनों के आधार पर परलोक में अपने प्रभु के सम्मुख उपस्थित होकर अपने जीवन के बारे में उत्तर देना होगा।

किसी अबोध बालक या विक्षिप्त व्यक्ति को न तो कोई पद दिया जाता है और न ही वह उसका उत्तरदायित्व होता है। इसी भांति पशु–पक्षी में जब ये विशेषताएं नहीं होती हैं तो वो किसी कुकर्म या सुकर्म के स्थिति में नहीं होते हैं। फिर इस योनि के बाद उन्हें मनुष्य के रूप में जन्म देने का क्या अर्थ होता है। यह भी सोच का विषय है कि एक मनुष्य ने बहुत अच्छे कर्म किये और दूसरे व्यक्ति ने बुरे कर्म किये और दोनों को ही उनके कर्मों के आधार पर मनुष्य के रूप में संसार में जीवन व्यतीत करने के लिए अवसर प्रदान किया गया। यह न्यायोचित नहीं मालूम होता है कि न्याय का जन्मदाता स्वयं न्याय के विपरीत कैसे कर रहा है। इस आस्था के संबंध में बढ़ती हुई जनसंख्या और उनकी समस्याएं ऐसे प्रश्न उत्पन्न कर रही है कि इस कलयुग में जहां अत्याचारियों की कमी नहीं। भ्रष्ट और दुराचार करने वालों की संख्या अपनी चरम सीमा से आगे है। महिलाओं के अधिकारों का हनन हो रहा है निर्बलों को उनके अधिकारों से वंचित किया जा रहा है, जैसा कि यहां जंगल राज का वातावरण हो गया है। ऐसी स्थिति में बढ़ी हुई मनुष्य की जनसंख्या यह बताती है कि इस सांसारिक जीवन के अन्तिम पड़ाव के पश्चात् कुकर्मों का दंड भोगने के लिए तैयार रहना चाहिए।

मनुष्य को मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् समस्याओं और प्रश्नों को उचित रूप से अवगत कराया जाए।

नअत

कहां मिलेगा जमाने को अब करार हुजूर
हवस के हाथ में आया है इक्तिदार हुजूर

इसीलिए तो मैं रोता हूं जार–जार हुजूर
नहीं है मेरे गुनाहों का कुछ शुमार हुजूर

ये आरजू है कि देखूं मैं बार–बार हुजूर
वो शहर आपका वो आपका दियार हुजूर

देया है तोहफा ये दुनियापरस्तियों ने हमें
हुई है जिल्लतो–ख्वारी गले का हार हुजूर

खुदा करे हमें तौफीके इत्तिहाद मिले
हमारा दुश्मने–जां है ये इन्तिशार हुजूर

गिरा के आपने हर ऊंच–नीच की दीवार
बुलन्द कर दिया इन्सान का वकार हुजूर

यही जहां में नया इंकिलाब लाएगा
पयाम आपका पैगामे नौबहार हुजूर

हयातो–मौत की वो कशमकश शबे–हिजरत
अमानतों के रहे फिर भी पासदार हुजूर

इस आसरे पे कि चश्मे–करम उठे एक बार
हफीज़ मेरी जुबां पर है बार–बार हुजूर।

हफीज मेरठी

इन्क़िलाब

अबू मर्ग़ूब

सुकूं मुहाल है क़ुदरत के कारख़ाने में
सबात इक इन्क़िलाब को है ज़माने में

इस दुन्या की हर चीज़ इन्किलाब पिज़ीर है, हर समय परिवर्तन हो रहा है, अतः कह सकते हैं कि अगर ठहराव है तो परिवर्तन ही को है, जो चीज हमेशा पाई जाती है वह इन्क़िलाब ही है।

न राम राज बाकी रहा न रावन, न कृष्ण रहे न कन्स, न प्रहलाद रहे न हिरण्यकशिपु न अशोक रहे न विक्रमादित्य, न अफगान रहे न मुग़ल, न ईस्ट इण्डिया कम्पनी रही न बृटिशकाल देश स्वतंत्र हुआ महात्मा गांधी देश के बापू थे कहां हैं वह? गोडसे ने अपने नजदीक बड़ा तीर मारा परन्तु कहां है गोडसे ? न प० जवाहर लाल जी रहे न अबुल कलाम आज़ाद, न गोरे सिकन्दर है न है क़ब्रे दारा मिटे नामियों के निशां कैसे कैसे

इन सारी घटनाओं से क्या समझ में आ रहा है? और क्या सबक़ मिल रहा है? यही तो कि एक दिन न बुश रहेंगे न नोटी ब्लेर न मुशर्रफ़ रहेंगे न नवाज़ शरीफ न हम रहेंगे न तुम

तो क्या फिर हम को इस दुन्या में जो कुछ भी ऐश व इशरत की चीजें हैं उन का लुत्फ ले लेना चाहिए जो भी भोग विलास की वस्तुएं हैं उन का आनन्द ले लेना चाहिए। और यह उसूल नियम अपना लेना चाहिए।

लुत्फ ले दुन्या का साथी
जिन्दगानी फिर कहां
जिन्दगानी गर रही तो
नव जवानी फिर कहां

या बाबर के कौल के मुताबिकः

बाबर ब ऐश कोश
कि दुन्या दोबरा नेस्त

बाबर दुन्या का आनन्द लेले कि दुन्या पुनः मिलने वाली नहीं।

ठीक है दुन्या दोबारा नहीं है, लेकिन मरने के पश्चात किया है? बस मर के मिट्टी में मिल जाना है और बस? अगर यह सोच है तो इस का क्या सुबूत (प्रमाण) है? यह रूह किसी मशीन द्वारा इस को कैद क्यों न कर लिया गया? इस प्राण के विषय में विभिन्न मत हैं मुख्तलिफ राएं हैं परन्तु, सब अटकल की बातें हैं। अल्बत्ता अल्लाह के रसूलों और नबियों ने जो बातें बताई हैं वह सत्य हैं, वह हक हैं, लेकिन अल्लाह के रसूलों की बातें पिछले लोगों ने महफ़ूज़ (सुरक्षित) नहीं रखीं खोदीं या भुला दीं या उन बातों में अपनी ओर से बहुत सी बातें मिला दीं। अलबत्ता अल्लाह के आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक एक बात उन के मानने वालों ने लिख कर किताबों में महफ़ूज़ कर दीं यह हदीस की किताबें हैं, इन में मशहूर बुख़ारी, मुस्लिम, अबीदाऊद, सुनने तिर्मिज़ी, सुनने इब्ने माजा, इन के अलावा भी कई मशहूर किताबें हैं जैसे मुवत्ता इमाम मालिक, मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, सुनने बैहक़ी सुनने दारिमी वग़ैरह। और क़ुर्आने मजीद तो ऐसा महफ़ूज़ है कि उस में एक हर्फ़ की कमी बेशी न हो सकी, आज लाखों लोग ऐसे हैं कि उन को क़ुर्आने मजीद ज़बानी याद है, किसी पढ़ने वाले से ज़ेर ज़बर की भी चूक हो जाए तो हाफ़िज़े क़ुर्आन तुरन्त टोकता है।

क़ुर्आन मजीद, हदीस और पूरा दीन इस लिए महफ़ूज़ है कि अल्लाह ने इस की हिफ़ाज़त का वअदा ख़ुद किया है और अपने अच्छे बन्दों को उस की हिफ़ाज़त पर ऐसा लगा दिया कि दुन्या में किसी दीन धर्म की हिफ़ाज़त का ऐसा प्रबन्ध देखने में नहीं आया।

पस हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन के लाए हुए दीन की बात पूरी तरह महफ़ूज़ है बताया कि मरने के वक़्त अल्लाह का फ़िरिश्ता इस जिस्म से रूह निकाल लेता है, फिर उन लोगों की रूहें जो अपने ज़माने के नबियों पर ईमान ले आए वह अल्लाह के हुक्मः से इल्लीयीन (अच्छी रूहों के रहने की जगह) में और जो लोग अपने ज़माने के नबी पर ईमान नहीं लाए उन की रूहें सिज्जीन (बुरी रूहों के रहने की जगह) पहुंचा दी जाती हैं लेकिन उससे पहले क़ब्र की मंज़िल है मरने वाला चाहे क़ब्र में दफ़न किया जाए चाहे पानी में बहा दिया जाए, चाहे आग में जला दिया जाए, चाहे किसी जानवर के पेट में पहुंच जाए, चाहे कुचल कर उसका जिस्म रेज़ा रेज़ा हो जाए, इल्लीयीन या सिज्जीन जाने से पहले दो फ़िरिश्ते

मुनकर और नकीर मरने वाले से तीन बातें पूछेंगे, तेरा रब, (पालनहार) कौन है, तेरा दीन (धर्म) क्या है तीसरा प्रश्न अन्तिम सन्देष्टा के बारे में होगा कि यह कौन हैं? अब इस दौर में मरने वाला अगर अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान ला चुका है तो तीनों प्रश्नों के सहीह़ जवाब इस प्रकार देगा, मेरा रब अल्लाह है, मेरा दीन इस्लाम हैं, और यह अल्लाह के अन्तिम सन्देष्टा हैं और मैं इनका उम्मती हूं। ऐसे शख़्स की रूह़ इ़ल्लायीन में आराम से रहेगी; और जो शख़्स अन्ति सन्देष्टा पर ईमान नहीं लाया कोई जवाब न दे पाएगा उसकी रूह़ सिज्जीन में तकलीफ़ में रहेगी। यह स्पष्ट रहे कि क़ब्र में हर एक स्वतः अ़रबी बोलेगा।

इस प्रकार यह रूहें कियामत तक या तो इ़ल्लीयीन में आनन्द लेती रहेंगी या सिज्जीन में तकलीफ़ बरदाश्त करती रहेंगी फिर जब क़ियामत आएगी तो एक बार सब कुछ फ़ना हो जाएगा फिर जब दोबारा सूर फूंका जाए गा तो सब जीवित होंगे, अल्लाह का दरबार लगेगा सब की करनी का हिसाब होगा, अच्छी करनी वाले जन्नत में सुख का जीवन बिताएंगे ऐसा सुख जिसे सोचा भी नहीं जा सकता वह जन्नत में सदैव रहेंगे। बुरी करनी वाले जहन्नम में जलेंगे, फिर निकाल कर जन्नत में लाये जाएंगे लेकिन जो अपने ज़माने के रसूल (सन्देष्टा) पर ईमान न लाएंगे अल्लाह का इन्कार कर देंगे या किसी को अल्लाह का साझी ठहराएं गे वह सदैव जहन्नम में जलेंगे।

यह इन्किलाब मानव को जन्नत पहुंचा के रहेगा या जहन्नम, पस इन्सान अपने हर परिवर्तना पर जहन्नम के अ़ज़ाब और जन्नत के पुरस्कार और अल्लाह की रज़ामंदी को सामने रखे इतराए नहीं, घमण्ड न करे, पापों से बचे अच्छे काम करता रहे कैसे हैं वह लोग जो –

मक़्बरों में देखते हैं अपनी इन आंखों से रोज़

यह बिरादर ये पिदर ये ख्वेश ये फ़रज़न्द है
फिर भी रअ़नाई से ठोकर
मार कर चले है यार
सूझता इतना नहीं सब
ख़ाक को पैवन्द है

गुलदार

एम०यूसुफ अन्सारी

गुलदार का दूसरा नाम तेंदुआ है। यह बिल्ली खान्दान का फाड़खाने वाला जांगली जानवर है। जमीन से कन्धे तक लगभग दो ढाई फिट ऊंचा होता है। शरीर लगभग चार फिट लम्बा और दुम तीन फिट लम्बी पांच इंच मोटी होती है। जब यह शाहाना चाल चलता है तो बहुत ही सुन्दर, शान्दार और और रोबदार दिखाई पड़ता है। इसके शरीर पर फूल जैसे चित्ते होते हैं। इस लिए इस का नाम गुलदार पड़ा विभिन्न इलाके के गुलदार के चित्ते छोटे बड़े होते हैं। बर्फीले क्षेत्रों के गुलदार के शरीर पर बड़े चित्ते दुम और पैरों पर छोटे चित्ते होते हैं। जब यह शिकार की घात में बैठता है तो आसानी से दिखाई नहीं देता क्योंकि वह अपने रंग की वजह से प्राकृतिक वातावरण में छुप जाता है। इसकी खाल बहुत कीमती होती है। इसलिए इसका शिकार किया जाता है। कुछ शिकारी इसे जिन्दा पकड़ते हैं। पहले फंदा बनाते हैं और फंदे के निकट बकरी आदि बांध देते हैं। गुलदार उसको खाने के लिए कूदता है तो अगला पैर फंदे में फंस जाता है शिकारी उस के शरीर पर मोटा कम्बल डाल देते हैं। गुलदार किसी को काट न खाए इससे बचने के लिए उस के मुंह पर लोहे की थूथ्नी बान्ध देते हैं। यह बहुत ही खतरनाक काम है जिसमें बड़ी महारत, चुस्ती और अनुभव की जरूरत होती है। फिर उसके पांव बांधकर घोड़े पर लाद कर या पिंजरे में रखकर रेलवे स्टेशन तक ले जाते हैं और किसी चिड़िया घर या सर्कस वालों से भारी कीमत वसूल लेते हैं। इस की मादा कैद की दशा में बच्चे नहीं दे सकती।

जंगली गुलदार हिरन, बन्दर और लोमड़ी आदि का शिकार करता है। बर्फीले क्षेत्र के गुलदार बर्फीले चट्टानों के आड़ में घात लगाकर बैठा रहता है, मार फोर, बर्फानी हिरन, रीछ, आईबस आदि जानवरों का शिकार करता है। ज्यूं ही शिकार निकट आता है, यह बिजली की तेजी से छलांग लगाकर दबोच लेता है। इस की पकड़ में आए हुए जानवर का बचकर निकलना लगभग असंभव होता है। जंगली गुलदार बिलोचिस्तान, वजीरिस्तान तथा आसाम के जंगलों में पाया जाता है। बर्फानी गुलदार हिमालय के जंगलों, बर्फीली पहाड़ियों और ठंडे स्थानों पर पाया जाता है। यह अफरीका, एशिया, ईरान साइबेरिया और कोरिया में भी पाया जाता है।

दो गज ज़मीं भी मिल न सकी कू–ए–यार में

शंकर कुमार

१८५७ के १५०वीं वर्ष गांठ समा राहे का आयोजन बहादुरशाह जफर की याद के बगैर अधूरा रहेगा। १८५७ में सैकड़ों राजाओं नवाबों जमींदारों तथा हजारों जवानों ने आखिरी मुगल शहंशा के नेतृत्व में अंग्रेजी राज्य के खिलाफ विद्रोह कर दिया। बहादुरशाह जफर जिनका देहान्त रंगून के कैदखाने में हुआ उनका शव आजादी के ६० वर्ष गुजरने के बाद भी उनकी अंतिम अच्छा के अनुसार भारत लाकर दफनाया नहीं जा सका।

उनकी कब्र रंगून के शिवड़ागान पगोडा में है बहादुरशाह का देहान्त १८६२ ई० में रंगून में हुआ परन्तु वहां से उनका शव नई दिल्ली के महरौली स्थित जफर महल में लाकर अपने पिता अकबर शाह द्वितीय की कब्र के निकट दफनाने की इच्छा पूरी न हो सकी। उनकी यह ख्वाहिश राजनीति की नजर हो गयी।

भारत के समक्ष, जो बहादुरशाह जफर के मकबरे के देखभाल के लिए वर्षों से मयांमार (बर्मा) को धन भेजता रहा है, पाकिस्तान के एक व्यक्ति ने उनके शव के अवशेषों का दावा पेश कर के एक अवरोध पैदा कर दिया है।

इस्लामाबाद का कथन है कि चूंकि बहादुरशाह जफर एक मुसलमान थे और मुसलमानों की एक बहुत बड़ी संख्या भारत से पाकिस्तान प्रस्थान कर गई है अतः आखिरी मुस्लिम बादशाह पर पाकिस्तान का हक है।

जफर के अवशेषों के सिलसिले में मयांमारा के फौजी शासक एक असमंजस का स्थिति में फंस गये हैं। केन्द्रीय सरकार इस समस्या को उलझते हुए देख कर खामोश हो गई है परन्तु स्वतंत्र सेनानी संतुष्ट नहीं हैं। उनका कहना है कि जब भारत सरकार पहली जंगे आजादी की १५० वीं वर्षगांठ पर १५० करोड़ रूपया खर्च कर रही है तो शहंशाह के अवशेषों को भारत न लाने की कोई दलील मानने योग्य नहीं है। स्वतंत्रता सेनानियों के नेता शशीभूषण ने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि प्रधानमंत्री मुगल शहंशाह की कब्र तथा अवशेष को भारत लाने की दिशा में सक्रिय कदम उठाएं। उन्होंने लिखा है कि "तमाम स्वतंत्रता सेनानियों की प्रबल इच्छा है कि इस वर्ष जब हम प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की १५०वीं वर्ष गांठ मना रहे हैं तो बहादुर शाह जफर की अन्तिम इच्छा पूरी की जाए।" इस पत्र में सुझाव दिया गया है कि अंतिम मुगल शहंशाह की कब्र उनके अववेश और कब्र के चारों ओर की मिट्टी कोलकाता लाई जाए और फिर दिल्ली। यह सुझाव चाहे पूरा हो या न हो परन्तु यह हकीकत है कि न केवल राष्ट्र बल्कि सम्पूर्ण उपमहाद्वीप १८५७ के इस महान हीरो का आभारी है।

दोहे

समता–ममता मर गयी, हिंसा बढ़ी अपार।
दिन–दिन मानव खो रहा, जीने का अधिकार।।
नहीं रही मर्दानगी, नहीं रहा वह जोश।
लोगों में अब ना रहा, अपनेपन का होश।।
पत्थर में देवी कहीं, कहीं भूत का जोर ।
चमत्कार का मच रहा, जगह–जगह अब शोर।।
लोकतंत्र में लग रही, प्रश्नों की बौछार।
संसद में कोई नहीं, उत्तर को तैयार।।
जीवन में हमने किया, सदा सभी से प्यार।
लेकिन लोगों ने दिया, दर्द हमें उपहार।।
रिश्ते अब गुरू शिष्य के, अब तो तारम–तार।
मूल्य और आदर्श भी, गिरे हैं लगातार।।
कांटों से जीवन भरा, नहीं कहीं भी फूल।
कदम–कदम पर चुभ रहे, अब जहरीले शूल।।
उखड़ा–उखड़ा मूड है, उमड़ी–उखड़ी सांस।
लोगों ने अब छोड़ दी, जीने की हर आस।।
लोकतंत्र को कर रहे, नेता अब बदनाम।
संसद में करने लगे, पशुओं जैसे काम।।

रोहित यादव

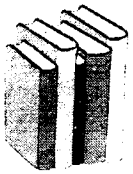

हिन्दुस्तानी उलमा की लाजवाब किताबें :

इस्लामी जगत के अहले इल्म और अहले नजर ने हिन्दुस्तानी उलमा की बहुत सी किताबों को अपने मौजूअ (विषय) पर बेहतरीन किताबों में शुमार (गणना) किया है। उनमें से तफसीर में क़ाज़ी सनाउल्लाह साहब की तफसीर मजहरी रद्दे इसाइयत और तौरात, इंजील की तहकीक (रिसर्च) में मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी की किताबें "इज़हारूल हक़" "इजालतुल अवहाम" और "इज़ालतुश शुकूक" इस मौजूअ पर हरफ़े आख़िर समझी गयी हैं। और तुर्की, मिस्र सीरिया के उलमा ने इस मौजूअ के तालिब इलमों और मुनाजिरीन (मजहबी बहस करने वाले) को इन्हीं किताबों के अध्ययन करने का मशवरा दिया हऔर वहां के प्रेसों ने उनको बार बार छाप कर उन किताबों की अहमियत का एतिराफ़ (स्वीकृत) किया।

अल्लामा महमूद जवनपूरी की "अलफराएद" फ़न्ने बलाग़त में मौलाना हमीदुद्दीन फराही की "जमहरूतुल बलागह" और कुरआन मजीद की कई सूरतों की तफ़सीरें अपने लेखकों की गहरी नज़र अरबी भाषा और फ़न्ने बलागत में उस्तादाना महारत और आलोचना दृष्टि को चिन्हित करती है।

जस्टिस करामत हुसैन की किताब "फिक़हुल लिसान" और मौलाना सैयद सुलैमान अशरफ की किताब "अल मुबीन" की अपने विषय पर अच्छी कोशिश और अपने लेखकों की तीव्रता, गहरी नजर और भाषा की रूचि की पहचान है। यह दोनों किताबें अरबी जबान का फलसफा (विज्ञान) और उसकी बनावट के रहस्य पर है। अरबी जबान के अलावा इस्लामियात और अदबियात (साहित्य) फारसी और उर्दू में हिन्दुस्तानी उलमा के कलम से ऐसी अछूती किताबें निकली हैं जो अपने विषय पर अपनी कुछ विशेषताओं के लिहाज से बिल्कुल अद्वितीय हैं, किसी दूसरे मुस्लिम देशों में उसकी मिसाल नहीं मिलती जैसे उलूम व मअरिफे दीनिया में शेख अहमद सरहिन्दी के मकतूबात, मखदूम शेख यहया मुनीरी के मकतूबात सहसदी मसअले खिलाफ़त पर हजरत शाह वली उल्लाह देहलवी की "इज़ालतुल ख़िफ़ा" उसूले तफसीर में उनकी "अल–फौजुल कबीर" रद्दे शियअत में शाह अब्दुल अ़ज़ीज़ की तुहफ़ए इसना अशरिया "तसव्वुफ व तजकियह में हजरत सय्यद अहमद शहीद की "सिराते मुस्तकीम" इस्लाम में मन्सबे इमामत और अइम्मा व नाइबीने रसूल के सिफात व फराएज के मौजअ (विषय) पर मौलाना इस्माईल शहीद देहलवी की "मन्सबे इमामत" मौलाना मुहम्मद कासिम साहब नानौतवी की, हुज्जतुल इस्लाम" और "तकरीरे दिल पजीर मौलाना अब्दुश शकूर फारूकी लखनवी की कुछ किताबें रद्दे शियाअत और तफसीरे आयात में, सीरते नबवी पर मौलाना सयद सुलैमान नदवी की सीरतुन नबी" और "खुतबात मदरास" और काजी मुहम्मद सुलैमान मनसूर पूरी की "सीरत रहमतुल्लिल आलमीन मौलाना सैयद मनाज़िर अहसन गीलानी की "अन–नबीयुल खातिम फारसी शाइरी पर मौलाना शिबली की "शेअरूल अजम बेनज़ीर (अद्वितीय) किताबें हैं और उनमें से कई किताबों का अनुवाद अरबी फारसी और तुरकी में हो चुका है।

हिन्दुस्तान के जदीद (नवीन) इलमी कामों में मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी की तफसीर (उर्दू और अंग्रेजी) भी क़ाबिले जिक्र (वर्णन योग्य) है, यह तफसीर उन मुकामात अशखास (स्थानों और व्यक्तियों) से संबंधित नवीन जानकारियां हैं जिन का कुर्आन में तजकिरह आया है साथ ही साथ यहूदियों और मसीहियों के मज़ाहिब व अकाएद की तहक़ीक़ (रिसर्च) और उन नए माअलूमात के लिहाज से जो मौजूदा इल्मे आसार व हफरियात (**Archeology and excavation**) और बाइबिली लिटेरेचर ने फराहम (उपलब्ध) करा दिये हैं, मौलाना दरयाबादी की तफसीर खास पहचान रखती है और इस्लामी लिटरेचर के एक बड़े खला को पुर करती है।

सभी पाठकों से अनुरोध है कि वह सच्चा राही के खरीदार बढ़ाने में सहयोग दें।

सभी पाठकों को अधिकार है कि वह अपने परामर्शों से परचे को अच्छे से अच्छा बनाने की चेष्ट करें।

हम आपके लाभदायक लेख शुक्रिये के साथ प्रकाशित करेंगे।

(सम्पादक)

अंध विश्वास का अत्याचार

अनुवाद – अब्दुर्रहीम सिद्दीकी

उत्तर प्रदेश का लगभग ३३ लाख जनसंख्या वाला हरदोई जिला ४२४२ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। ३ तहसील ७ ब्लाक वाले इस जिले के ५७ प्रतिशत लोग तालीम याफता जरूर हैं परन्तु वह मजहबी कदामत पसन्दी के दल दल में फंसे हुए हैं।

हालांकि सियासी तौर पर यह जिला काफी मशहूर है। हरदोई जिला के कछौना थाना के इलाके में गांव लौनिहारह में बाबूलाल नामी एक आदमी रहता था और एक छोटे स्कूल में अध्यापक था शिक्षा दीक्षा के पवित्र तथा स्वच्छ व्यवसाय में बाबूलाल को मजा नहीं आ रहा था। उसकी यह सोच थी कि जो लोग तन्तर मन्तर की तिजारत करते हैं समाज में उनका आदर भी किया जाता है, और उनके पास पैसे भी काफी रहते हैं।

उसने कई बार उन्नति के उच्च शिखर पर पहुंचे हुए लोगों के हालात टी.वी. पर देखे तो उसको अन्दाजा हुआ कि अनाप सनाप किस्म के काम करने वाले लोग ही तरक्की करते हैं। वह इस भूल में मुब्तला हो गया कि जो भी आदमी बुलन्दियों को छूता है वह इन्सान की बलि देकर ही उस शिखर पर पहुंचता है उसकी मजहबी किताबों में भी (उससे सम्बन्धित) यह लिखा है कि कोई भी अच्छा काम करने से पहले बलि दी जाती है।

बाबू लाल ने टीवी पर एक दृश्य देखा कि एक व्यक्ति अपने गालों के आरपार लोहे की कील डाल रहा है, दूसरा व्यक्ति कांच के टुकड़ों पर लेट कर अपने ऊपर भारी से भारी चीज निकालने के लिए रास्ता दे रहा था। टीवी में इन लोगों को चमत्कार दिखाने वाला व्यक्ति बताया जा रहा था, लोग उनकी प्रशंसा कर रहे थे। बाबू लाल के दिल व दिमाग में इन दृश्यों ने अपने गहरे असरात मुरत्तब किए, अचानक उसके दिमाग में एक बात आई कि क्यों न वह भी इस किस्म का काम करके शोहरत हासिल कर ले।

बाबू लाल ने फिर अपने गाल के आरपार लोहें की कील निकालना सीखना शुरू किया, साथ ही कांच के टुकड़ों पर लेट कर अपने ऊपर से बैलगाड़ी निकालने का काम करने लगा, कुछ दिनों में ही बाबूलाल ने यह सब कुछ काम करना सीख लिया। अब बाबूलाल आस पास के गांव वालों को अपने काम सिखाने लगा, गांव वालों को वह बताने लगा कि वह जिन्दपीर की पूजा करता है उसने कहीं से सुन रखा था कि अगर किसी बच्चे की बलि दी जाए, तो बाबा जिन्दपीर खुश होते हैं और बलि देने वाले को इतनी शक्ति प्रदान कर देते हैं कि वह कुछ भी करने के लायक हो जाता है।

बेनीगंज पुलिस के मुताबिक, पहली बार बाबू लाल ने किछौना थाना इलाके के रहने वाले रघुवीर के बेटे प्रदीप की बलि दी, बलि देने से पहले बाबू लाल ने प्रदीप के साथ गलत काम भी किया था उसके बाद उसको कूड़े के ढेर में दबा दिया। उसके बाद बाबू लाल को लगने लगा कि उसमें ताकत आ गयी है और अब वह कुछ भी कर सकता है उस बीच बाबू लाल छोटे बच्चों के साथ गलत काम भी करने लगा था। गाल के आर पार लोहे की कील निकालने और कांच के टुकड़ों के ऊपर लेट कर अपने ऊपर से बैल गाड़ी निकाल देने की वजह से गांव वाले बाबू लाल को पहुंची हुई ताकत मानने लगे। अपने इस तरह के काम दिखाने के लिए बाबूलाल जिला हरदोई के गांव देवरिया में रहने वाले रामेन्द्र यादव के घर भी आता जाता रहता था, रामेन्द्र के दो छोटे बेटे थे, बड़ा बेटा छोटू ८ साल का और छोटा बेटा आकाश ४ साल का था।

११/अक्टूबर २००६ की सुबह बाबूलाल रामेन्द्र के घर गया, बात चीत करते करते उसने रामेन्द्र के दोनों बच्चों को अपने साथ लिया ओर कहा, "चलो तुम को तैरना सिखा लाऊँ।"

बाबू लाल दोनों बच्चों को लेकर छरहरह नाले के पास आ गया, वहां उसने छोटे बेटे आकाश को नाले के किनारे छोड़ दिया और बड़े बेटे छोटू के कपड़े वहीं उतरवा दिये और उसको नहलाने के बहाने नाले के उस पार लेकर चला गया, काफी समय हो गया लेकिन छोटू और बाबू लाल में से कोई वापस नहीं आया। आकाश भाई के कपड़े लेकर घर चला आया।

आकाश ने पूरी बात घर वालों को बताई, गांव वाले इकट्ठा हुए और बाबूलाल को तलाश करने लगे, पता चला कि तान्तरिक बाबूलाल देवरिया पश्चिम गांव में है, सभी लोग वहां पहुंच

गये और बाबूलाल को पकड़ लिया। सभी लोग उससे छोटू के बारे में पूछ ताछ करने लगे, बाबू लाल ने छोटू के बारे में कुछ भी कहने से इन्कार कर दिया, उस पर गांव के लोग उसकी पिटायी करने लगे। तब बाबूलाल ने सच्चाई कबूल की और गांव वालों को अपने साथ लेकर नाले के पास झाड़ियों में गया, जहां खून से लत पत छोटू की लाश पड़ी थी, लाश पर दांत से काटने के बाद खून पीने के निशान भी मौजूद थे, उससे साफ लग रहा था कि कत्ल करने के बाद छोटू का खून पीने का काम भी किया गया था।

गांव के लोगों ने बाबू लाल को पकड़ कर बेनीगंज थाने की पुलिस के हवाले कर दिया। बेनीगंज पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार बाबू लाल ने कहा कि वह जिन्दपीर की पूजा करता है उसको खुश करने के लिए छोटू की गरदन और पीठ समेत शरीर के दूसरे भागों पर दांत से काट कर खून पीकर बलि दी। पुलिस ने छोटू की लाश पोस्ट मार्टम के लिए भेज दिया। पोस्टमार्टम के मुताबिक डाक्टर ने कहा कि छोटू की मौत उसके गलत काम करने के बाद दांत से काटने और गला दबा कर कत्ल करने की वजह से हुई, इस तरह का यह पहला हादसा नहीं है। हाल के कुछ दिनों में बलि देने के हादसात बढ़े हैं। बलि की इन वाक्यात की एक बड़ी वजह धर्म है।

धर्म की तमाम कहानियों में यह बहुत पहले से बताया जा रहा है कि बलि देने से ऊपर वाला खुश होता है, इन वाक्यात को सुनकर तन्तर मन्तर करने वाले यह सोचने लगते हैं कि अगर वह भी किसी की बलि दें तो ऊपर वाला उनको भी ताकत देगा। मजहबी कहानियों में उलझ कर बाबू लाल ने छोटू की बलि दी। लगता है, मजहब और वहम परस्ती (अंधविश्वास) की कहानियों पर आंख बन्द करके भरोसा करने वालों की संख्या कम नहीं हो रही, बल्कि बढ़ रही है।

राष्ट्रीय सहारा उर्दू ३१.७.२००७ के शुक्रिये के साथ। (अनुवादक : अब्दुर्रहीम सिद्दीकी)

(परन्तु सत्यधर्म इस्लाम में ऐसा नहीं है। सम्पादक)

जनाब मौलाना हबीबुर्रहमान न रहे

लोग कहते हैं कि मिर्जा मर गये
दर हकीकत वह तो अपने घर गये

हां किसी के इन्तिकाल पर यही तो समझा जाता है कि उस का घर बार, जमीन जायदाद आल औलाद सब छूट जाते हैं जब कि हकीकत यह है कि वह तो यहां मुसाफिर था । अब अपने घर चला गया। यहां तो जो आता है, सब समझ लेते है कि इस को एक दिन जाना है।

किसी फारसी वाले ने क्या हकीकत बयान की है :

अगर दुन्या कसे पाइन्दा बूदे
अबुल कासिम मुहम्मद जिन्दा बूदे

अगर दुन्या की किसी की जिन्दगी बाकी रहने वाली होती तो हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर्दा न फरमाते।

२८ अगस्त को मुजफ्फर नगर में था कि एक अजीज ने मोबाइल से इत्तिलाअ दी कि उस्तादुल असातिजा (गुरूओं के गुरू) जनाब मौलाना हबीबुर्रहमान इस दुन्या में न रहे। मैंने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ी और मगफिरत की दुआ की। मौलाना ने लगभग ५० वर्ष नदवे में पढ़ाया कुछ को छोड़ कर नदवे के सारे असातिजा (गुरू) उन से पढ़ चुके हैं। वह हिदाया पढ़ाने में बड़ी महारत रखते थे नह्व भी पढ़ाते थे। इल्म बहुत पुख्ता था, बड़ी वजअ कतअ के थे, उनके कपड़ों पर कभी शिकन न देखी गई किसी मैले कुचैले की खिदमत कुबूल न करते, हजामत बनाने साफ सुथरा नाई आता, औजार खुद मुहैया कराते, औकात के बड़े पाबन्द थे, जब तक सिहत रही नमाज जमाअत से अदा की।

इन्तिकाल के वक्त मौलाना अपने नगर सुलतानपुर में थे। २६ जुलाई की सुब्ह को दारूल उलूम के असातिजा और तलबा की एक तादाद मौलाना की जियारत और तदफीन में शिकरते के लिए पहुंची। शैखुत्तफसीर मौलाना बुरहानुद्दीन संभली ने नमाजे जनाजा पढ़ाई और मौलाना के आबाई कब्रिस्तान में तद्फीन अमल में आई।

अपने पाठकों से अनुरोध है कि उनके लिए मगफिरत की दुआ करें।

नमाज़े तरावीह़

इदारा

रमज़ानुल मुबारक में पूरे रमज़ान, इ़शा के फ़र्ज़ों और सुन्नतों के बअ़द जमाअ़त के साथ नमाज़ तरावीह़ अदा करना सुन्नते मुअक्किदा अ़ललकिफ़ाया है, यअ़्नी अगर पूरी बस्ती में तरावीह़ की नमाज़ जमाअ़त से न हुई तो सब सुन्नत मुअक्किदा छोड़ने के सबब मलामत के क़ाबिल होंगे। अल्बत्ता मस्जिद में जमाअ़त से तरावीह़ पढ़ीं गयी और कुछ लोगों ने अकेले अकेले तरावीह़ की नमाज़ अदा कर ली तो कोई ह़रज नहीं, औ़रतों के लिए घर ही पर तरावीह़ पढ़ना बेहतर है।

मुम्किन हो तो तरावीह़ में पूरे रमज़ान में एक क़ुर्आन सुन्ना सुन्नत है, जब कि ह़ाफ़िज़ उजरत न तलब करे, तरावीह पढ़ाने वाले को हदीया, तुह़फ़ा देना और नक़्द पैसे देना भी जाइज़ है मगर उजरत तै करना ना जाइज़ है। जहां ह़ाफ़िज का इन्तिज़ाम ना हो सके छोटी छोटी सूरतों से तरावीह़ की जमाअ़त कर लेना चाहिए।

अह्नाफ़ के नज़दीक तरावीह़ की नमाज़ दो दो रक़्अ़त पर सलाम फेर कर बीस रकअ़तें हैं, हर चार रकअ़तों पर ज़रा रूका भी जाता है जिस को तरवीह़ा कह़्ते है, इसी तरावीहे की निस्बत से इस नमाज़ को तरावीह़ कहते हैं। अहले ह़दीस ह़ज़ारात तरावीह़ आठ रकअ़तें पढ़ते हैं। हमारे दारूल उलूम दनवतुल उ़लमा में अहले ह़दीस तलबा की ख़ासी तअ़दाद है। स्टाफ में भी कुछ ह़ज़रात अहले ह़दीस हैं। मस्जिद में बीस रकअ़त तरावीह़ होती है। अहले हदीस हजरात आठ रकअ़त पर चले जाते हैं, न ह़नफ़ी अहले ह़दीस पर तन्क़ीद करते हैं न अहले ह़दीस आठ रकअ़त की दलीलें पेश करते हैं। जहां भी अहले ह़दीस और अह़नाफ़ एक साथ रह रहे हों यही तरीक़ा अपनाना चाहिए और दोनों को अपनी अपनी तह़क़ीक़ पर अ़मल करना चाहिए।

मुनासिब होगा कि हम यहां शैख अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ सलमान मुदर्रिस मअ़हद इमामुद्दअ़्वः (रियाज़) की किताब "अल मनाहिलुल् ह़िसान दुरूसुन फी रमज़ान" से तरावीह़ की रकअ़तों के बारे में उलमा के अक़्वाल नक़्ल कर दूं।

इमाम अह़मद और जमहूर उलमा ने बीस रकअ़तें इख़्तियार की हैं, मुवत्ता इमाम मालिक में यज़ीद बिन रोमान से नक़्ल है कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) के ज़माने में लोग तेईस रकअ़तें पढ़ते थे, साइब बिन यज़ीद से रिवायत है कि जब उ़मर (रज़ि०) ने लोगों को उबइ बिन कअब पर जमअ़ किया तो वह उन को बीस रकअ़तें पढ़ाते थे। शाफी में अबू बक्र बिन यजीद, इब्नि अ़ब्बास से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रमज़ान में बीस रकअ़तें पढ़ते थे। शैख़ुल इस्लाम (इब्नि तैमिया) बीस रकअ़ते पढ़ते थे जैसा कि इमाम मालिक का मज़हब है, और वह ग्यारह और तेरह रकअ़तें भी पढ़ते थे यह सब बेहतर है। यह रकअ़तो की कमी ज़ियादती क़ियाम की कमी ज़ियादती के लिजाह से थी, और यह सब नमाज़ियों पर इन्हिसार करता है अगर वह दस रकअ़तों पर इक्तिफ़ा करते हैं, बअ़द में तीन जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रमज़ान और गैर रमज़ान में पढ़ा करते थे तो यह अफ़ज़ल है और अगर इतने पर इक्तिफ़ा नहीं करते तो बीस रकअ़तों पर क़ियाम करें उनके लिये यही बेहतर है इसी पर मुसलमानों की अक्सरीयत का अ़मल है पस यह दस और चालीस के बीच की बात है। अगर किसी ने चालीस रकअ़तें पढ़ीं या और तो यह भी जाइज़ है और इसमें कोई कराहत नहीं है और जिस ने गुमान किया कि रमज़ान के क़ियाम में मुतअ़य्यन रकअ़तें हैं उन में कमी ज़ियादती नहीं हो सकती तो उस ने ग़लती की, जब बन्दे में निशात हो तो उस के लिए लम्बी इ़बादत बेहतर है, निशात न हो तो उस के लिये (गैर फ़र्ज़) इबादतों में कम कर देना बेहतर है।

मैंने सऊ़दिया में सात रमज़ान गुज़ारे हैं, रियाज़ में क़ियाम रहा, वहा आ़म तौर से तरावीह़ की नमाज़ आठ रकअ़त होती है कुछ मस्जिदों में दस भी पढ़ी जाती है, लेकिन २० रमज़ान की शाम से हर मस्जिद में बीस रकअ़तें तरावीह़ में पढ़ी जाती, हमारी मस्जिद में आठ रकअ़तें इ़शा के फ़र्ज़ों और सुन्नतों के बअ़द और बारह रकअ़तें मअ़ वित्र १२ बजे के बअ़द। वहां हर मस्जिद में एक तरफ़ पर्दा करके औ़रतों को भी तरावीह़ में शरीक किया जाता। बअ़ज़ मस्जिदों में इमाम क़ुर्आन हाथ में लेकर तरावीह़ पढ़ाता।

भारतीय इतिहास

प्रो. श्रीनेत्र पाण्डेय

चन्द्रगुप्त का शासन प्रबन्ध : चन्द्रगुप्त न केवल एक महान विजेता वरन एक कुशल शासक भी था। जिस शासन–व्यवस्था का उसने निर्माण किया वह इतनी उत्तम सिद्ध हुई कि भावी शासकों के लिए वह आदर्श बन गई और थोड़े बहुत आवश्यक परिवर्तनों के साथ निरन्तर चलती रही। चन्द्रगुप्त का शासन तीन भागों में विभक्त था अर्थात् केन्द्रीय शासन, प्रान्तीय शासन तथा स्थानीय शासन।

केन्द्रीय शासन : यह उस शासन को कहते हैं जो राज्य के केन्द्र अर्थात् राजधानी से संचालित होता है और जिस का संचालन सीधे सम्राट तथा उसके परामर्श दाताओं और मंत्रियों द्वारा होता है। अतएव केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत सम्राट, उसके मंत्री तथा परामर्शदाता, गुप्तचर–विभाग, सेना का प्रबन्ध, न्यायालय आदि आते हैं। अब इनका अलग–अलग दिवेचन किया जायेगा।

१. **सम्राटः** केन्द्रीय शासन का प्रधान स्वयं सम्राट होता था और उसी की आज्ञाओं तथा आदेशों के अनुसार सम्पूर्ण देश का शासन चलता था। वह स्वयं कानूनों का निर्माण करता था, वही नियमों के पालन करवाने की व्यवस्था करता था और वह नियमों का उल्लंघन करने वालों को दण्ड भी देता था। इस प्रकार सम्राट् स्वयं व्यवस्थापिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका का प्रधान होता था और वही सम्पूर्ण देश के शासन का केन्द्र बिन्दु बन गया था। स्मिथ महोदय ने लिखा है कि "चन्द्र गुप्त के शासन से सम्बन्धित विदित तथ्य इस बात को सिद्ध कर देते हैं कि वह कठोर निरंकुश शासन था। सम्राट न केवल प्रशासकीय विभाग का सर्वेसर्वा था वरन् वह सैनिक–विभाग का भी प्रधान था और वह स्वयं सेना संगठन की व्यवस्था करता था और युद्ध के समय वह स्वयं सेनापति के कार्यों को करता था।

इससे स्पष्ट है कि राज्य की सारी शक्ति सम्राट के हाथ में थी और उसी की इच्छानुसार सम्पूर्ण राज्य का शासन संचालित होता था। अतएव यदि यह कहें कि चन्द्रगुप्त का शासन एकतंत्रीय, स्वेच्छाचारी तथा निरंकुश था तो कुछ अनुचित न होगा। परन्तु स्वेच्छाचारी शासन का यह तात्पर्य नहीं है कि सम्राट् मनमाना शासन करता था और लोकमत की चिन्ता नहीं करता था। स्वेच्छाचारी शासन का केवल यह तात्पर्य है कि सिद्धान्ततः राजा की शक्ति तथा उसके अधिकारों पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण न था परन्तु क्रियात्मक रूप में उसे परंपरागत नियमों, अपने परामर्शदाताओं के परामर्शों तथा नैतिक नियमों को आदर की दृष्टि से देखना पड़ता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से हमें ज्ञात होता है कि सम्राट अपनी प्रजा का ऋणी समझा जाता है। वह अच्छा शासन करके ही इस ऋण से मुक्त हो सकता था। अतएव स्वेच्छाचारी होते हुए भी प्रजा के हित में शासन करना राजा का परम धर्म था। अपनी प्रजा का अधिक से अधिक कल्याण करने के लिए और अपने शासन को सुचारूरीति से संचालित करने के लिए सम्राट मंत्रियों तथा अन्य पदाधिकारियों की नियुक्ति करता था।

(२) **मंत्रि परिषद्** : सम्राट को अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्यों में परामर्श तथा सहायता देना के लिए एक मन्त्रि परिषद् की व्यवस्था की गयी थी, क्योंकि चन्द्रगुप्त के प्रधान परामर्शदाता कौटिल्य का यह विश्वास था कि शासन की गाड़ी एक पहिए से नहीं चल सकती। सम्राट उसका एक पहिया है, अतएव उसके दूसरे पहिये अर्थात मंत्रि परिषद का होना अनिवार्य है, तभी शासन सुचारू रीति से संचालित होगा और प्रजा का अधिक से अधिक कल्याण हो सकेगा। मंत्रि परिषद के सदस्यों को सम्राट् स्वयं नियुक्त करता था और यह भी वेतनभोगी होते थे। केवल वही लोग इस पद पर नियुक्त किये जाते थे जो बुद्धिमान, निर्लोभी तथा सच्चरित हो। मंत्रि–परिषद् अपना निर्णय बहुमत से देती थी परन्तु सम्राट सदैव अपनी परिषद् के निर्णय को मानने के लिए बाध्य न था। ऐसा प्रतीत होता है कि मंत्रि–परिषद् राज्य के केवल अत्यन्त महत्वपूर्ण विषयों में अपना परामर्श देने के लिए बुलाई जाती थी। राज्य के दैनिक कार्यों से उसका कोई सम्बन्ध

न था।

अपने दैनिक शासन को सुचारू–रीति से संचालित करने के लिए सम्राट को परामर्श देने और उसकी सहायता करने के लिए एक दूसरी सभा होती थी जिसके सदस्य मंत्री परिषद के सदस्यों से अधिक ऊंचा तथा महत्वपूर्ण होता था। मंत्रियों की नियुक्ति भी सम्राट स्वयं करता था और इस पद पर वही नियुक्त किये जाते थे जो बुद्धिमान, निर्लोभी तथा सच्चरित् हो। मंत्रि–परिषद अपना निर्णय बहुमत से देती थी परन्तु सम्राट् सदैव अपनी परिषद् राज्य के केवल अत्यन्त महत्वपूर्ण विषयों में अपना परामर्श देने के लिए बुलाई जाती थी। राज्य के दैनिक कार्यों से उसका कोई सम्बन्ध न था।

अपने दैनिक शासन को सुचारू–रीति से संचालित करने के लिए सम्राट को परामर्श देने और उसकी सहायता करने के लिए एक दूसरी सभा होती थी जिस के सदस्य मंत्रिन् कहलाते थे। मंत्रिन् का पद मंत्रि परिषद् के सदस्यों से अधिक ऊंचा तथा महत्वपूर्ण होता था। मंत्रियों की नियुक्ति भी सम्राट स्वयं करता था और इस पद पर केवल ऐसे ही लोग नियुक्त किये जाते थे जिनके किसी भी प्रकार के प्रलोभन में पड़ने की संभावना नहीं रहती थी और जिनकी पहले से ही परीक्षा की जा चुकी हो और उसमें वे सफल हो चुके हों। कौटिल्य ने इन मंत्रियों की संख्या केवल तीन चार बतलाई है। ये मंत्री देश–रक्षा, विदेशी मामलों, आकस्मिक आपत्तियों के लिए व्यवस्था करने, शासन को सुचारू–रीति से संचालित करने आदि मामलों में सम्राट को परामर्श दिया करते थे। परन्तु अपने मंत्रियों से परामर्श को मानने के लिए सम्राट बाध्य न था।

(३) विभागीय व्यवस्था : मंत्रि–परिषद् तथा मंत्री लोग सम्राट् को केवल परामर्श देते, वे दैनिक शासन को संचालित नहीं करते थे। राज्य के दैनिक शासन के सुचारू–रीति से संचालित करने के लिए चन्द्रगुप्त ने विभागीय व्यवस्था का निर्माण किया था। विभागीय व्यवस्था का तात्पर्य है कि संपूर्ण शासन का कार्य विभिन्न विभागों में विभक्त कर दिया गया था और प्रत्येक विभाग को शासन के एक दो विषय सौंप दिये जाते थे। प्रत्येक विभाग का एक अध्यक्ष होता था जो अमात्य कहलाता था। चन्द्रगुप्त के शासन काल में इस प्रकार के कुल अठारह विभाग थे। अतएव उसने अठारह अमात्यों को नियुक्त कर रखा था। इन अमात्यों के अधीन अनेक पदाधिकारी तथा कर्मचारी होते थे जो दैनिक शासन को सुचारू–रीति के संचालित किया करते थे। अमात्यों था उनसे नीचे काम करने वाले सभी कर्मचारियों की नियुक्ति सम्राट स्वयं किया करता था और वे सभी सम्राट् के प्रति उत्तरदायी होते थे। यहां पर ध्यान देने की एक बात यह है कि जिस विभागीय व्यवस्था का सूत्रपात चन्द्रगुप्त ने आज से लगभग चौबीस शताब्दी पूर्व किया था उस का अनुसरण आज सारे संसार में हो रहा है।

(४) पुलिस का प्रबन्ध : दैनिक शासन को सुचारू रीति से संचालित करने के लिए आंतरिक शांति अथवा सुव्यवस्था नितांत आवश्यक है। इस आंतरिक शांति तथा सुव्यवस्था के लिए पुलिस का प्रबन्ध करना अति आवश्यक है। पुलिस दो प्रकार के कार्य करती है। उसका प्रथम कार्य तो यह कि वह देखे कि लोग राज्य के नियमों को भंग नहीं करते वरन् उनका अक्षरशः पालन करते हैं और उसका दूसरा कार्य यह है कि जो लोग राज्य के नियमानुसार कार्य न करें अथवा उनके विपरीत कार्य करें उन पर अभियोग लगाये और उन्हें दण्ड दिलवाये जिससे भविष्य में ऐसे काम न करें और अन्य लोग भी भयभीत होकर राज्य के नियमों का पालन करें। चन्द्रगुप्त तथा उसके प्रधानमंत्री चाणक्य ने पुलिस की इस प्रतियोगिता का अनुभव किया और एक अत्यन्त सुसंगठित तथा सुव्यवस्थित पुलिस–विभाग का प्रबन्ध किया गया। पुलिस के सिपाही 'रक्षिन्' कहलाते थे, क्योंकि समाज का सारा भार उन्हीं के ऊपर रहता था।

(५) गुप्तचरों का प्रबन्ध : यद्यपि प्रकट–पुलिस अपराधों का पता लगाने का यथाशक्ति प्रयत्न करती है परन्तु कुछ अपराध ऐसी गुप्त–रीति से किये जाते थे कि प्रकट–पुलिस उनका पता लगाने में प्रायः असमर्थ रहती है इन गुप्त रीति से किये गये अपराधों का पता लगाने में गुप्त–रीति से ही सफलता प्राप्त होती है। चन्द्रगुप्त ने गुप्तचरों की उपयोगिता का अनुभव किया और एक अत्यन्त सुन्दर गुप्तचर विभाग का उसने संगठन किया। गुप्तचर उस व्यक्ति को कहते हैं जो गुप्त रूप से विचरण करके सब बातों का पता लगाये। चन्द्रगुप्त मौर्य का गुप्तचर विभाग दो भागों में विभक्त था। एक को संस्थान कहते थे और दूसरे को संचारण। संस्थान–विभाग का संस्थान नाम पड़ने का करण यह था कि इस

विभाग के गुप्तचर एक स्थान पर रहते थे और वहीं से विचरण किया करते थे और संचारण–विभाग का संचारण नाम पड़ने का कारण यह था कि इस विभाग के गुप्तचर सदैव भ्रमण किया करते थे। वे किसी निश्चित स्थान पर नहीं रहते थे। ऐसा लगता है कि स्थानीय बातों की सूचना प्राप्त करने के लिए सम्राट ने संस्थान–विभाग का और दूर–दूर की बातों का पता लगाने के लिए उसने संचारण–विभाग का संगठन किया। चन्द्रगुप्त के गुप्तचर विभाग की एक बहुत बड़ी विशेषता यह थी कि उसमें स्त्रियां भी काम किया करती थीं। स्त्रियों को गुप्तचर बनाने का कारण यह प्रतीत होता है कि संभवतः अपराधों तथा षडयंत्रों का पता लगाने में और किस स्थान पर कौन–सी बात हो रही है, इसकी सूचना सम्राट् को अपने गुप्तचरों द्वारा प्राप्त हो जाया करती थी। अपने राज्य के बड़े–बड़े कर्मचारियों के कार्यों की भी सूचना उसे अपने गुप्तचरों से मिल जाती थी। इस प्रकार षडयंत्रों कुचक्रों को पता लगाने में सम्राट को कोई कठिनाई नहीं होती थी।

(६) न्याय का प्रबंध : पुलिस तथा गुप्तचरों द्वारा अपराध का पता लग जाने पर यदि अपराधियों को दंड देने की कोई व्यवस्था न की गई तो पुलिस तथा गुप्तचर विभाग का संगठन निरर्थक हो जाता है। अतएव प्रत्येक राज्य को न्याय का प्रबन्ध करना पड़ता है। न केवल अपराधियों को दंड देने के लिए वरन् नागरिकों को पारस्परिक झगड़ों का फैसला करने के लिए भी न्याय–प्रिय तथा विवेकशील न्याय–व्यवस्था की आवश्यकता का अनुभव किया और अपने विद्वान, अनुभवी तथा नीति–निपुण प्रधान–मंत्री चाणक्य की सहायता से एक ऐसी न्याय व्यवस्था का निर्माण किया जिसका अनुकरण आज भी सभ्य संसार द्वारा किया जा रहा है। चन्द्रगुप्त द्वारा स्थापित न्याय व्यवस्था में सम्राट् स्वयं सबसे बड़ा न्यायधीश होता था। राजा के नीचे अन्य न्यायधीश होते थे। नगरों तथा जनपदों के लिए अलग–अलग न्यायाधीश होते थे। नगरों के न्यायधीश व्यावहारिक महामात्य और जनपदों के न्यायाधीश राजुक कहलाते थे। जो न्यायाधीश चार गांवों के लिए होते थे वे संग्रहण जो चार सौ गांव के लिए होते थे वे द्रोणमुख और जो आठ सौ गांवों के लिए थे वे स्थानीय कहलाते थे। न्यायधीशों को धर्मस्थ कहते थे। प्रत्येक न्यायालय दो भागों में विभक्त थे जों न्यायालय दीवानी अर्थात धन संबंधी झगड़ों का निर्णय करते थे वे कंटक शोधन कहलाते थे। छोटी अदालतों के निर्णय की अपीलें बड़ी अदालतों में होती थी और सम्राट का निर्णय अंतिम निर्णय माना जाता था। चन्द्रगुप्त के शासन काल में दण्ड विधान बड़ा कठोर था। जुर्माने के साथ–साथ अंग–भंग तथा मृत्यु का भी दण्ड दिया जाता था। कठोर दंड–विधान का परिणाम यह हुआ कि अपराधों में बड़ी कमी हो गई और लोग प्रायः अपने घरों में बिना ताला लगाये ही बाहर चले जाते थे। राजा की वर्ष–गांठ, राज्याभिषेक, राज कुमार के जन्म तथा नये प्रदेशों पर विजय प्राप्त करने के शुभ अवसर पर कैदियों को मुक्त करने की भी व्यवस्था की।

(७) लोक मंगलकारी कार्यः यह पहले बताया जा चुका है कि चन्द्रगुप्त के प्रधानमंत्री कौटिल्य के विचारों में राजा अपनी प्रजा का ऋणी समझा जाता था और लोकमंगलकारी कार्य करके ही वह अपनी प्रजा के ऋण से मुक्त हो पाता था। फलतः उसने अनेक लोक–मंगलकारी कार्य किये। उसका पहला लोकमंगलकारी कार्य यह था कि उसने यातायात अर्थात गमनागमन के साधनों की समुचित व्यवस्था की। उसने सड़कों का निर्माण कर बड़े–बड़े नगरों को एक दूसरे से मिला दिया। इन नदियों को पार करने के लिए उसने पुल बनवाये। चन्द्रगुप्त ने दूसरा लोक मंगलकारी कार्य यह किया कि उसने कृषि–क्षेत्रों की सिंचाई के लिए बड़ी सुन्दर व्यवस्था की। राज्य की ओर से बहुत से तालाब और कुंए खुदवाये गये। उस के पुष्यगुप्त नामक प्रांतीय शासक ने सौराष्ट्र में सिंचाई के लिए सुदर्शन नामक एक बहुत बड़ी झील का निर्माण करवाया था। सम्राट् का तीसरा लोकमंगलकारी कार्य स्वास्थ्य तथा स्वच्छता की समुचित औषधि तथा योग्य वैद्य और चिकित्सक रक्खे। नगरों की स्वच्छता तथा भोजन–सामग्री की शुद्धता के लिए उसने निरीक्षक रक्खे थे। उसका चौथा मंगलकारी कार्य शिक्षा की समुचित व्यवस्था थी। शिक्षा का कार्य प्रधानमंत्री अथवा पुरोहित की अध्यक्षता में होता था। शिक्षालयों को राज्य की ओर से सहायता दी जाती थी। इन सब लोकहित के कार्यों के अतिरिक्त दीन–दुखियों, असहायों तथा अकाल पीड़ितों की सहायता की भी समुचित व्यवस्था की गयी थी। इस बात का परिणाम यह हुआ कि उसके काल में जनता सुख तथा सम्पन्नता का जीवन व्यतीत करती थी।

(८) सेना का प्रबन्ध : चन्द्रगुप्त ने आंतरिक शान्ति तथा सुव्यवस्था के साथ–साथ अपने साम्राज्य के विस्तार तथा उसकी सुरक्षा के लिए एक विशाल सेना का संगठन भी किया था। चन्द्रगुप्त बड़ा ही महत्वाकांक्षी सम्राट् था और सम्पूर्ण भारत को एक राजनीति सूत्र में बांध देने की उसकी इच्छा थी। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति तथा वाह्य आक्रमणों से अपने राज्य को सुरक्षित रखने के लिए एक विशाल, सुसज्जित तथा सुशिक्षित सेना की आवश्यकता थी। अतएव उसने एक चतुरंगिणी अर्थात हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल का संगठन किया और उसकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था की? सम्राट् स्वयं सेना का प्रधान सेनापति होता था और युद्ध के समय रणस्थल में उपस्थित रहता था और उसका संचालन करता था। चन्द्रगुप्त ने जल सेना का भी संगठन किया था। सम्पूर्ण सेना के प्रबन्ध के लिए ३० सदस्यों की एक समिति होती थी। सेना का प्रबन्ध ६ भागों में विभक्त था और प्रत्येक विभाग का प्रबन्ध पांच सदस्य के हाथ में रहता था। प्रत्येक विभाग का एक अध्यक्ष होता था। पहला विभाग जल सेनाका प्रबन्ध करता था। दूसरा विभाग सेना को हर प्रकार की सामग्री तथा रसद भेजने का प्रबन्ध करता था। तीसरा विभाग पैदल सेना, चौथा अश्वारोहियों, पांचवां हाथियों की सेना और छठा रथ–सेना का प्रबन्ध करता था। सेना के साथ एक चिकित्सा विभाग भी होता था जो घायल तथा रुग्ण सैनिकों की चिकित्सा करता था। चन्द्रगुप्त की सेना स्थायी थी और राज्य की ओर से उसे वेतन तथा अस्त्र शस्त्र भी मिलता था। अस्त्र–शस्त्र बनाने के लिए सरकारी कार्यालय भी थे। स्मिथ महोदय चन्द्रगुप्त मौर्य के सैनिक संगठन की सुयोग्यता की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं, "चन्द्रगुप्त मौर्य ने एक विशाल स्थायी सेना की व्यवस्था की थी जिसे सीधे राज–कोष से वेतन दिया जाता था और जो अकबर की सेना से भी अधिक सुयोग्य थी।"

(९) आय–व्यय का साधन : शासन को सुचारू–रीति से संचालित करने तथा सेना के प्रबन्ध के लिए बहुत धन की आवश्यकता पड़ती है। अतएव राज्य को कर लगाने पड़ते हैं। भूमि कर राज्य की आय का प्रधान साधन था। किसानों से उपज का चौथा भाग सरकार ले लेती थी। परन्तु कभी–कभी केवल आठवां भाग लिया जाता था। किसानों से पशु भी सम्राट् को भेंट के रूप में मिलते थे। नगरों में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के विक्रय–मूल्य का दसवां भाग राज्य को मिलता था। जुर्माने से भी राज्य को कुछ धन मिल जाता था। आय का बहुत बड़ा भाग सेना तथा शासन पर व्यय किया जाता था। शिल्पकारों, विद्वानों, दार्शनिकों, अनाथों, वृद्धों, रोगियों, अपाहिजों तथा आपत्तिग्रस्त लोगों को भी राज्य से सहायता मिलती थी। अकाल पीड़ितों की भी सहायता की जाती थी और सिंचाई, नगर की किलेबन्दी, भवन निर्माण तथा विभिन्न प्रकार के लोकमंगलकारी कार्यों पर बहुत सा धन व्यय किया जाता था।

प्रांतीय शासन : चन्द्रगुप्त का साम्राज्य बड़ा ही विशाल था। अतएव उस युग में जब यातायात के साधनों का सर्वथा अभाव था तब एक केन्द्र से सम्पूर्ण राज्य का शासन चलाना सम्भव न था। अतएव शासन की सुविधा के लिए सम्राट ने अपने साम्राज्य को कई प्रांतों में विभक्त कर दिया और प्रत्येक प्रान्त शासन के लिए एक प्रांतपति नियुक्त कर दिया था। इन प्रांतपतियों की नियुक्ति सम्राट् स्वयं करता था। इस पद पर सम्राट ऐसे ही लोगों को नियुक्त करता था। जिनमें उनका पूर्ण विश्वास था या राजकुल के राजकुमारों को वहां नियुक्त करता था। यह शासक कुमार शांति रखना और वहां के शासन को सुचारू रीति से चलाना प्रांतपति का प्रधान कार्य होता था। युद्ध के समय सम्राट को सैनिक सहायता पहुंचाना भी उसका कर्तव्य होता था। सम्राट् अपने प्रांतपतियों पर अपना कड़ा नियंत्रण रखता था और अपने गुप्तचरों से उनकी गति–विधि की पूरी सूचना प्राप्त किया करता था। इस सम्बन्ध में स्मिथ महोदय ने लिखा है, "मौर्य केन्द्रीय सरकार का नियंत्रण सुदूरस्थ प्रान्तों तथा अधीनस्थ पदाधिकारियों पर अकबर द्वारा नियंत्रण से भी अधिक कठोर प्रतीत होता है।

स्थानीय शासन : स्थानीय शासन का तात्पर्य गांवों तथा नगरों के शासन से है। चन्द्रगुप्त ने इस बात का अनुभव किया कि यदि गांव तथा नगरों का शासन स्थानीय अर्थात् वहीं के लोगों को सौंप दिया जाय तो अति उत्तम होगा। अतएव उसने गांवों तथा नगरों की संस्थाओं का संगठन उन्हें पर्याप्त स्वतंत्रता दे रखी थी। इस प्रकार आधुनिक ग्राम पंचायतों तथा नगरमहापालिकाओं का बीजारोपण चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में हो चुका है।

रमज़ानुलमुबारक के रोज़े

मौलाना मुजाबुल्लाह नदवी

रोजों की अहम्मीयतः

क़ुर्आन मजीद की बहुत सी आयात और अहादीस से रोज़ों की केवल अहम्मीयत (महत्व) तथा फ़ज़ीलत ही नहीं सिद्व होती है अपितु उन की गिन्ती उन फ़राइज़ में ज्ञात होती हैं जिन पर इस्लाम का आधार है, क़ुर्आने पाक में हैः मुसलमानों तुम पर रोज़े उसी प्रकार फर्ज़ किये गये है जैसे तुम से पहले दूसरी उम्मतों पर फ़र्ज़ किये गये थे। (अल बकरः आयात१८३) इस से यह भी ज्ञात हुआ कि रोज़ा पहले की उम्मतों पर भी फर्ज़ था।

रमाज़ान के रोज़े

इस उम्मत पर रमज़ान महीने के रोज़े फ़र्ज़ किये गये जैसा कि क़ुर्आने मजीद में हैः रमज़ान का महीना वह महीना है जिस में क़ुर्आन उतारा गया, लोगों के लिये हिदायत है, यह हिदायत की स्पष्ट बातों तथा सत्य को असत्य से अलग करने का संग्रह है, अतः जो इस महीने को पाए इस में रोज़े रखे (अलबकरःआयत१८५) आगे बताया गया है कि जो बीमार हो या मुसाफिर हो और इन दिनों में उस को रोज़ा रखने में कठिनाई हो वह इस महीने के छूटे रोज़े गिन कर किसी और महीने में रख सक़ता है।

क़ुर्आन पाक के अतिरिक्त अहादीस में भी रोज़ों की बड़ी फज़ीलत (श्रेष्ठता) बयान हुई है, एक हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः हर नेकी का सवाब बन्दों के अअमाल नामे में दस गुने से सात सौ गुने तक लिखा जाता हैं लेकिन रोज़ा ख़ास मेरे लिये है और खुद मैं उस का बदला दूँगा। (बुख़ारी)

हर घर का एक दरवाज़ा होता है और इबादत का दरवाज़ा रोज़ा है। फ़रमाया 'जिन रोज़ेदारों के रोज़े क़बूल हो जाएं तो उन के लिये क़ियामत के दिन एक दरवाज़ा होगा जिस से वह जन्नत में दाख़िल होंगे उस दरवाज़े का नाम 'रय्यान है, अर्थात प्यास बुझा देने वाला। जब रोज़ा शुरूअ होता है तो शैतान क़ैद कर दिये जाते हैं, जहन्नम का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता है और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते है। रोज़ा कियामत के दिन सिफ़ारिश करेगा, वह कहेगा ऐ परवरदिगार इस ने मेरी वजह से खाना पीना और मन की इच्छाऐं छोड़ दी थीं तू इस को छमा कर दे। (यह सब हदीसें मिश्कात से ली गई है)

लेकिन सारा लाभ और सारा सवाब जब मिलेगा जब रोज़ा अल्लाह तआला के यहाँ मक़बूल हो और किसी इबादत के मक़्बूल होने कि लिये ज़रूरी है कि वह इबादत केवल अल्लाह को राज़ी करने क लिये की गई हो। रोज़ा ऐसी इबादत है जिस में दूसरी इबादतों के मुक़ाबले में ख़ुलूस ज़ियादा होता है। एक आदमी चाहे तो छुप कर खा पी सकता है या अपनी काम इच्छा पूरी कर सकता है, जिसे ख़ुदा के अलावह कोई दूसरा देख नहीं सकता फिर भी न वह खाता पीता है न काम इच्छा पूरी करता है इस का अर्थ यह है कि वह खुदा ही को ख़ुश करने और राज़ी करने के लिये रोजा रखता है, यही कारण है कि खुदा ने कहा कि रोज़े का बदला मैं खुद दूंगा।

परन्तु कुछ काम ऐसे हैं जो इस खुलूस को ख़राब कर देते है जिन के सबब रोज़ेदार रोज़े के सवाब से महरूम (वंचित) हो जाता है, जैसे लड़ाई झगड़ा करना, गाली बकना, पीठ पीछे किसी की बुराई करना, चुग़ली करना, हराम माल खाना, जो लोग रोज़ा रखकर इन बातो से नहीं बचते उन के बारे में हुज़ूर(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया किः

जो शख़्स ग़लत झूठ और गुनाह का काम न छोड़े तो अल्लाह को ज़रूरत नहीं कि वह अपना खाना पीना छोड़ दे। (बुखारी) और फ़रमायाः कितने रोज़ेदार है जिनको प्यासे रहने के सिवा कुछ हासिल नहीं। (मिश्कात)

इसी बिना पर आप ने फ़रमाया रोज़े से गुनाहो के मुआफ़ होने की दो शरतें है एक ईमान, दूसरा एहातिसाब, ईमान तो यह है, ख़ुदा, क़ियामत,आख़िरत वग़ैरह जो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बताया है सब को माने ओर एहतिसाब यह है कि रोज़ा खुदा को राज़ी करने ही के लिये रखा गया हो और उसे तमाम बुराइयों से बचाया गया हो।

यही सबब था कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रमज़ान का महीना शुरूअ होने से पहले ही और रमज़ान के बीच में भी बड़ी ताकीद

फरमाया करते थे आप बार–बार फरमाते कि जो शख्स ईमान व एहतिसाब के साथ रोजा रखेगा उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे। हज़रत सलमान फ़ारसी से रिवायत है कि शअ़बान के आख़िरी दिनों में सहाबा से आप ने फ़रमाया कि एक बहुत ही मुबारक महीना तुम्हारे ऊपर साया किये हुए है, इस महीने में एक रात लैलतुलक़द्र हज़ार महीने से ज़ियादा बेहतर है, दिन में इस के रोज़े फ़र्ज़ है और रात की इबादत में सवाब है, रमज़ान में नफ़्ल का सवाब सत्तर गुना बढ़ा कर मिलता है। यह सब्र का महीना है, और सब्र का बदला जन्नत है, यह हमदर्दी (सहानुभूति) और सुलूक (सदव्योहार) का महीना है। इस में मोमिन की रोज़ी ज़ियादा होती है, जो शख़्स रोज़ेदार को इफ़्तार करा दे उसको एक रोज़े का सवाब मिलेगा इस पर सहाबा ने पूछा या रसूलल्लाह हम में से हर शख़्स के पास इतना अधिक खाना तो नही कि ख़ुद भी खाऐं और किसी को इफ़्तार भी कराएं आप ने फ़रमाया कुछ न हो तो एक खजूर या पानी ही से इफ़्तार करा दो। ध्यान दीजिये कि सहाबा के पास इतना ज़ियादा खाना भी न होता था कि किसी को इफ़्तार करा सकें मगर इस के बावजूद वह रोज़ा रखते थे, ख़ुद हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का भी यही हाल था कि कभी–कभी रोज़े पर रोज़ा रखना पड़ता था। (बुखारी व मुस्लिम)

अफ़सोस है कि इस ज़माने में शरीअ़त के दूसरे अहकाम की तरह रोजों की तरफ से भी बड़ी ला परवाही हो गई है, पहले गुनहगार से गुनहागार मुसलमान भी रमजान में रोज़ा रखकर पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करता था और औरतें तो सौ फ़ीसद रोज़ा रखती थीं मगर अब बड़ी कोताही चल रही है, कुछ बेहया रमाज़ान में खुले आम खाते पीते हैं और सिग्रेट बीड़ी पीते नजर आते हैं, उन को खुदा की पकड़ से डरना चाहिए, जिस तरह रोज़े का बहुत सवाब है उसी तरह रोजा छोड़ने का गुनाह भी बहुत है और रोजे में बे हयाई से खाने पीने वालों को दोहरा अ़ज़ाब होगा। दीनदारों को चाहिए कि ऐसे भाइयों से मिलें हमदर्दी और हिकमत से बात कर के उन को रोज़ा रखने, रोज़े का एहतिराम करने और नमाज़ की पाबन्दी करने पर आमादा करें। इंशा अल्लाह कामयाबी होगी।

प्यासे बादल

शाअिर लोग भी किस किस वादी में जाते हैं और न जाने क्या क्या कल्पित करते हैं, बादल तो स्वयं जल का भंडार होता है वह स्वयं कैसे प्यासा होता है परन्तु वास्तविक शाअ़िर वही तो है जो नई कल्पना प्रस्तुत करे। अतएव हमारे योग्य कवि डाक्टर अब्दुल अजीज अर्चन महोदय ने अपने काव्य संग्रह का नाम प्यासे बादल रख दिया, उनका काव्य उपनाम "अर्चन" भी तो अनोखा है।

पुस्तक "प्यासे बादल" २१ X १३ सेन्टीमीटर साइज के १४४ पृष्ठों पर फैली हुई है, अच्छी कम्पोजिंग अच्छा कागज, अच्छी छपाई, अच्छी जिल्द, सुन्दर कवर, मूल्य केवल १०० रूपया। मिलने के पतों में से एक पता :

डॉ० अब्दुल अजीज अर्चन गुल बर्ग मंजिल
खैराबाद, अवध, जिला सीतापुर
दूसरा पता : आरिफ अली बुक सेन्टर
लतीफ मार्केट, खैराबाद अवध
जिला सीतापुर

इस संग्रह में ५३ गीतिकाएं हैं जो एक से एक हैं, ८ गीतें हैं, त्रिपदों की संख्या २०१ है अंत में २६ दोहे भी हैं। यह सत्य है कि हिन्दी कविताएं शिर्क (अनेकेश्वरवाद) से लतपत हैं, रहिमन के पश्चात हमें कोई मुस्लिम कवि नहीं दिखता जिस ने हिन्दी साहित्य को शिर्क से मुक्त करने की चेष्टा की हो, हमें आशा है कि डॉ० अब्दुल अजीज महोदय अपनी योग्यता से यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करेंगे। अब हम डाक्टर जी की रचनाओं से कुछ त्रिपद और कुछ दोहे प्रस्तुत कर के हिन्दी स्कालरों से अनुरोध करेंगे कि वह इस काव्य संग्रह से लाभ उठाएं।

त्रिपद

न्याय व्यवस्था,
प्रश्न चिन्ह है,
विमुख आस्था।।

मोड़ दिशाएं,
पग पग पर हों,
जब घटनाएं।।

कैसी उलझन,
हर मुखड़े पर,
चिन्तित अर्चन।।

दोहे :-

सभी दिशाओं में देखे नागफनी के हाथ
ऐसे में कैसे मिले, फूलों का संग साथ
होगा पर्वत से बड़ा, कद तेरा नादान
गहरे सागर में उतर, तो कुछ हो अनुमान

रोज़ों के मसाइल

चान्द की गवाही

अगर मतलअ साफ न हो और आम लोगों को चान्द नज़र न आए लेकिन एक नमाज़ी परहेज़गार सच्चा मुसलमान मर्द हो या औरत यह गवाही दे कि मैंने चांद देखा है तो उस की गवाही मान लेना चाहिए और दूसरे दिन से रोज़ा शुरूअ़ कर देना चाहिए।

आज कल कभी कभी धुंवा, गैस वगैरह की कसाफ़त (प्रदूषण) से बज़ाहिर मतलअ़ साफ़ नज़र आता है अर्थात मतलअ़ पर बादल नहीं दिखता लेकिन ह़क़ीक़त में मतलअ़ साफ नहीं होता, ऐसी सूरत में आम तौर से चान्द नहीं दिखता और एक दो बल्कि चार छे नमाज़ी मुसलमान चान्द देखते हैं तो उनको झुठला दिया जाता है उलमा ह़ज़रात को इस पर ग़ौर करना चाहिए। एक मुल्क का मतलअ़ दूसरे मुल्क से मुख़्तलिफ़ होता है लिहाज़ा पच्छिम के दूसरे मुल्क जैसे पाकिस्तान में चांद दिख जाए और हमारे यहां न दिखे तो पाकिस्तान का चान्द हमारे यहां मुअ़तबर न होगा।

नीयत के बिना रोज़ा नहीं होता, रमज़ान के रोज़े की नीयत मग़रिब बअ़द से दोपहर आने से पहले तक दुरूस्त होगी, दिल में रोज़ा रखने का इरादा कर लेने से नीयत हो जाएगी, सह़री खाने से भी नीयत हो जाएगी, ज़बान इदारा से नीयत ज़रूरी नहीं है और अगर शाम को ज़बान से कह लें कि मैं सुबह़ रोज़ा रखूंगा या सुब्ह को कह ले की आज मैं रोज़ा रखूंगा तो भी नीयत हो जाएगी। नीयत हर रोज़ करना ज़रूरी है, रमज़ान में दूसरे दिन की नीयत या कई दिन की या पूरे रमज़ान की नीयत दुरुस्त न होगी।

सह़री देर कर के खाना ज़ियादा बेहतर है लेकिन इतनी देर न करें कि रोज़ा मशकूक हो जाए।

जिस तरह़ सह़री में देर करना बेहतर है उसी तरह़ इफ़्तार में जल्दी करना बेहतर है, जूं ही यक़ीन हो जाए कि सूरज डूब गया है इफ़्तार कर लेना चाहिए, नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरी उम्मत उस वक़्त तक भलाई पर रहेगी जब तक इफ़्तार में जल्दी करती रहेगी देर करना मक्रूह है, छूहारे या खजूर या पानी से इफ़्तार करना बेहतर है।

बदली के दिनों में ज़रा देर कर के रोज़ा इफ़्तार करना चाहिए चाहे घड़ी के एअ़तिबार से वक़्त हो गया हो।

सर में तेल डालने बदन पर तेल मलने, सुर्मा लगाने, मिस्वाक करने सूखी हो या गीली, दोपहर से पहले या बअ़द में, ख़ुशबू लगाने, सूंघने, भूले से खा पी लेने, खुद से क़ै हो जाने कम हो या ज़ियादा, गर्मी के सबब बार बार कुल्ली करने या बदन पर तर कपड़ा रखने, सोते में एहतिलाम हो जाने से रोज़ा नहीं टूटता है।

कान या नाक में दवा डालने से रोज़ा टूट जाता है कान में तेल डालने से रोज़ा टूट जाएगा नहाते वक्त चाहे तालाब में डुबकी लगाएं रोज़ा न टूटेगा।

कोयला वगैरह चबा कर दान्त मांजने, टूथ पेस्ट करने से रोज़ा मक्रूह हो जाता है। एहतियात चाहिए और इसे मिस्वाक पर कियास न करना चाहिए।

मुसाफ़िर या मरीज़ अगर रोज़ा न रख सके तो उन को इजाज़त है कि मुसाफ़िर बअ़द सफ़र, मरीज़ बअद सिह़त अपने रोज़े पूरे करें यही हुक्म दूध पिलाने वाली औरत का है।

हैज़ (माहवारी) और निफ़ास (बच्चे की पैदाइश के बअ़द खून आने का ज़माना) वाली औरतें उस ह़ालत में रोज़ा नहीं रख सकतीं बअ़द में कज़ा करें। अहम अहम मसाइल यहां लिखे गये हैं जो मसाइल लोग आम तौर से जानते हैं वह यहां नहीं लिखे गये।

नसीह़त

मैं पढ़ता हूं आप भी पढ़िये अस्तग़फिरुल्लाह रब्बी मिन कुल्लि ज़ांबिव्व अतूबु इलैहि, अशहुद, अल्लाइलाह इल्लल्लाह व अशहदु अन्न महम्मदर्रसूलुल्लाह, सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व सल्लम।

होश हवास में यह पढ़ते रहें, शरीअत पर चलते रहें तो आख़िर वक्त तकलीफ में कल्मा न निकले तो कोई हरज नहीं और निकल जाए तो बेहतर।

मुसलमानों की हबशा की ओर हिजरत

हजरत मौलाना अली मियां (रह०)

(नोट : हिजरत परिभाषिक शब्द है अर्थ है इस्लाम धर्म के लिए देशत्यागना) जब (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने देखा कि आपके साथियों को बड़े कष्टों का सामना करना पड़ रहा है और उनकी रक्षा, सुरक्षा में कठिनाइयां हैं, तो आप ने उन को निर्देश दिया कि तुम लोग हबशा की ओर निकल जाओ तो अच्छा है। वहां का जो राजा (बादशाह) है उस के प्रबन्ध में कोई किसी पर अत्याचार नहीं करता, वह एक अच्छा देश है, यहां तक कि अल्लाह तआला तुम्हारे लिये मुक्ति तथा सम्पन्नता का द्वार खोल दे।

इस अवसर पर मुसलमानों के एक दल ने हबशा की ओर हिजरत की, यह इस्लाम में पहली हिजरत थी, जिस में दस आदमी थे, और उन्होंने अपना नायक (अमीर) उस्मान बिन मजऊन (रज़ि०) को नियुक्त किया था। उस के पश्चात जअफर बिन अबी तालिब ने हिजरत की, फिर बहुत से मुसलमान एक के पीछे एक कर के, वहां पहुंचे, उन में कुछ अकेले, अकेले गये तो कुछ परिवार जन के साथ गये, इन सब की कुल संख्या तिरासी बताई गई है।

हबशा को हिजरत केवल कुरैश की ओर से कष्टों से छुटकारा हेतु न थी अपितु इस्लाम प्रसारण तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चिन्ता को कम करना भी था।

मुहाजिरीन (देश त्यागियों) की सूची की समीक्षा से उस के क्षेत्र के फैलाव तथा विभिन्नता का अनुमान होता है और ज्ञात होता है कि उस में समाज के सभी वर्गों की प्रतिनिधित्व है, धनवान तथा निर्धन भी, बूढ़े और जवान भी, पुरूष तथा नारियां भी, और उनमें से अधिकतर लोगों का सम्बन्ध मक्के के पुरातम परिवारों से था, जिस से इस्लामी दअवत का शक्तिशाली प्रभाव तथा उसके बल और फैलाव का पता चलता है।

कुरैश का पीछा करना

कुरैश ने यह देखा कि मुसलमान हबशा पहुंच कर शान्तिपूर्वक सुख चैन से रह रहे हैं तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन रबीअः और अम्र बिन आस बिन वाइल को वहां भेजा और उनके साथ नजाशी बादशाह तथा उस के लड़ाकू सेना पतियों तथा अधिकारियों के लिए बहुत से उपहार तथा भेंट भेजे। यह दोनों नजाशी की राज सभा में उपस्थित हुए, सेनापतियों तथा अधिकारियों को मूल्यवान भेंटों से पहले ही अपना सहमत तथा सहयोगी बना चुके थे, उन्होंने राजा (बादशाह) के सम्मुख अपनी बात इस प्रकार प्रस्तुत की :–

महाराज महोदय के देश में हमारे यहां के कुछ मूर्ख लड़कों ने आकर शरण ली है, जिन्होंने अपना धर्म छोड़ा है तथा आप का धर्म भी स्वीकार नहीं किया है, अपितु एक नया धर्म निकाला है, जिसे न हम जानते हैं न आप। हम को आप के पास इन की कौम के कुछ बड़े तथा उत्तरदायी लोगों (जो इन के सम्बन्धी भी हैं) भेजा है कि आप इन लड़कों को लौटा दे कारण यह है कि वह इन की बातों से अधिक अवगत तथा निकट हैं।

घूस खाये अधिकारी जो राजा के इर्द गिर्द थे एक स्वर होकर बोले : यह दोनों पूर्णतया सत्य कह रहे हैं आप इन शरणार्थियों को इन को सौंप दें। नजाशी को इस बात पर क्रोध आ गया और उस ने इन की बात मानने से इन्कार कर दी और उस ने इस को अनुचित जाना कि जो उस की शरण में आए, उसे बे सहारा छोड़ दे, उस ने कसम खाई कि वह वापस न करेगा। उसने मुसलमानों को बुलाया और पादरियों को भी और मुसलमानों से पूछा कि वह धर्म (दीन) क्या है जिस के लिए तुमने अपनी कौम को छोड़ा और उन के धर्म की त्यागने के पश्चात मेरे धर्म को भी स्वीकार न किया न किसी और परिचित धर्म को अपनाया? उस समय रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचेरे भाई खड़े हुए और निम्न भाषण दिया।

जअफर बिन अबी तालिब का भाषण :

ऐ बादशाह! हम जाहिलियत वाली कौम थे, मूर्तियों को पूजते थे, मरे हुए पशु खाते थे, हर प्रकार की निर्लज्जता तथा पापों में लतपत थे, हम में से जो बलवान होता वह निर्बलों को खा जाता, हम इसी दशा में थे कि अल्लाह तआला ने अपनी दया से हम ही में से एक सज्जन को अपना रसूल

(सन्देष्टा) बना कर भेजा, जिस के वंशज से, जिस की सच्चाई, सत्य निष्ठा, पवित्रता तथा संयम से हम लोग परिचित थे। उन्होंने हम को इस सत्य पर आमंत्रित किया कि हम केवल एक पूज्य अल्लाह पर विश्वास लाएं और केवल उसी की उपासना करें तथा हम और हमारे बाप दादा जिन मूर्तियों तथा पाषाणों को पूजते थे, उनको छोड़ दें, उन से सम्बन्ध तोड़ लें, उन्होंने हम को सच बोलने,धरोहर वापस करने, सम्बन्धियों को सहयोग देने उन का सम्मान करने, पड़ोसियों से अच्छा व्यवहार रखने, अवैध तथा वर्जित बातों और अवैध रक्त पात से बचने का निर्देश दिया, निर्लज्जता के कार्यों, झूठ, धोखा, विश्वासघात, अनाथों का माल खाने, पवित्राचारी तथा संयमी नारियों पर दोष लगाने से रोका है। उन्होंने हम को आदेश दिया है कि हम केवल एक उपास्य अल्लाह की पूजा करें और उसके साथ किसी को साझी न बनायें। उन्होंने हम को नमाज का, जकात का, रोजों का आदेश दिया। (इस अवसर पर उन्होंने और भी इस्लाम के स्तम्भों का वर्णन किया) हम ने उन सब को माना उन पर ईमान लाए और जो नियम तथा शिक्षा वह अल्लाह की ओर से लाए उस को अपनाया एक उपास्य अल्लाह की उपासना को ग्रहण किया, उस के साथ किसी को साझी नहीं ठहराया, जो उन्होंने हराम किया उसे हराम जाना, जो उन्होंने हलाल किया उसको हलाल माना, इस बात पर हमारी कौम हमारी शत्रुता पर उतर आई, हम को नाना प्रकार के कष्ट दिये, हम को इस सत्य धर्म से फेरने के लिए भांति भांति की परीक्षाओं में डाला और इस का प्रयास किया कि हम केवल अल्लाह की उपासना छोड़ कर मूर्तियों की पूजा भी अपना लें और जिन पापों, जिन अपराधों को पहले वैध समझ कर उन में लतपत थे फिर उन को वैध तथा उचित जानने लगें।

जब उन लोगों ने हम पर बड़ा अत्याचार तथा अति किया, हमारा जीना दूभर कर दिया, और हमारे धर्म के कामों के बीच दीवार बन गये हम को सत्य मार्ग पर चलने से रोकने लगे तो ऐ बादशाह हम आप के देश में शरण लेने आए हैं, हम ने शरण हेतु आपका चयन किया, आप के जवार (प्रतिवेश) तथा शरण की इच्छा की। ऐ बादशाह हम यहां इस आशा से आए हैं कि यहां हम पर कोई अत्याचार न किया जा सकेगा।

नजीशी ने यह पूरी बातें शान्तिमय होकर सम्मान पूर्वक सुनीं और पूछा कि तुम्हारे नबी अल्लाह के पास से जो कुछ लाए हैं उस की कोई चीज तुम्हारे पास है ?

हजरत जअफर ने कहा है –

नजाशी ने कहा मुझे पढ़ कर सुनाओं।

हजरत जअफर ने सूर–ए–मरयम की आरंभिक आयतें पढ़ीं तो नजाशी रो पड़ा यहां तक कि उस के आंसुओं रो उस की दाढ़ी भीग गयी, उस के दरबार (राज सभा) के पादरी भी इतने रोये कि उन के धर्म ग्रन्थ आंसुओं से भीग गये।

नजाशी ने कहा : निःसन्देह यह और जो कुछ हजरत ईसा लाए थे एक ही नूर की किरनें हैं, फिर उस ने कुरैश के दोनों कासिदों (राजदूतों) से कहा : तुम यहां से चले जाओ खुदा की कसम मैं इन को तुम्हारे हवाले करने वाला नहीं।

अम्र बिन आस बोले :

बादशाह सलामत ! यह लोग हजरत मसीह के विषय में ऐसी बातें कहते हैं. जिनका जबानपर लाना भी उचित नहीं।

नजाशी ने पूछा तुम लोग हजरत मसीह के विषय में क्या कहते हो? जअफर अबी तालिब ने उत्तर दिया हम उन के विषय में वही कहते हैं जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हम को बताया है। हजरत मसीह (अ०) अल्लाह के बन्दे हैं उस के रसूल हैं। उस की रूह हैं और कलिमा हैं जो उस ने पाक बाज कंवारी मरयम पर इल्का किया यह सुनकर नजाशी ने अपना हाथ जमीन पर मारा और एक तिनका उठा कर कहा कि खुदा की कसम जो कुछ तुम ने बयान किया है, हजरत ईसा (अ०) उस से इस तिन्के के बराबर भी जियादा नहीं है।

नजाशी ने मुसलमानों को बड़े आदर के साथ राज सभा से विदा किया, उन को शरण दी, कुरैश के वह दोनों दूत अपमानित होकर वहां से निकले और मुसलमानों ने बहुत अच्छे घर और अच्छे पड़ोसियों में जगह पाई। (सीरत इब्नि हिशाम से ग्रहीत)

(अनुवाद : मु० हसन अन्सारी)

लेखकों से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर हाशिया छोड़ कर स्पष्ट लिखा करें। ज्ञात रहे कि हर अगले मास का पूरा मैटर पहली तारीख को कम्पोजिंग में चला जाता है।

– सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

●इराक पर हमला एक बड़ी दुखद घटना

ब्रिटिश प्रधान मंत्री टोली ब्लेयर ने जहां कहा कि सद्दाम हुसैन की हुकूमत समाप्त करने के लिए अमेरिका का साथ देने पर वह लज्जित नहीं है वहीं पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिम्मीकार्टर ने ब्लेयर की तरफ से इराक पर हमले के अंधे समर्थन को संसार के साथ एक बड़ी दुखद घटना करार दिया। यह सूचना मीडिया ने दी है। मिस्टर ब्लेयर ने बगदाद में सदर जलाल तलबानी और प्रधानमंत्री नूरुलमालिकी से, (प्रधानमंत्री की हैसियत से) अपनी आखिरी मुलाकात के बाद एक प्रेस कान्फ्रेन्स में कहा कि सद्दाम हुसैन को सत्ता से हटाने और अमरीका का साथ देने पर उन्हें कोई शर्मिन्दगी नहीं है। उनके निकट इराक का भविष्य इराकी जनता की इच्छाओं के अनुकूल होना चाहिए और पड़ोसी देशों को भी इसका आदर करना चाहिए। दूसरी तरफ बीबीसी पर मिस्टर कार्टर ने मिस्टर ब्लेयर पर आरोप लगाया कि उनके इराक मामले में राष्ट्रपति बुश की पालिसी के अंधे समर्थन के कारण इराक की लड़ाई पूरी दुन्या के लिए एक दुखद घटना बन गई। उन्होंने कहा कि अगर मिस्टर ब्लेयर ऐसा न करते तो अमेरिका के राजनीतिक क्षेत्रों और ज़नता की राय पर इस के प्रभावी नतीजे निकलते और समस्या इतनी जटिल न होती जितनी इस समय है।

●अरब देशों के आंतरिक मामलात में बाहरी देशों का हस्तक्षेप बर्दाश्त के बाहर :

सऊदी अरब के शाह अब्दुल्लाह और मराकश के शाह मुहम्मद ने अपनी मुलाकात के बाद अरब देशों के आंतरिक मामलों में गैर मुल्की हस्तक्षेप को रद कर दिया। अरब न्यूज के समाचार के अनुसार दोनों बादशाहों ने अपने एक संयुक्त बयान में कहा कि तमाम अरब देश सभी महत्वपूर्ण समस्याओं के सिलसिले में अपनी जिम्मेदारियां पूरी करने को तैयार हैं। इसके लिए हम अल्लाह और अपनी जनता पर भरोसा करते हैं। सूचना के अनुसार दोनों बादशाहों ने तनहा मुलाकात की जिसमें अरब और इस्लामी देशों और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार विमर्श किया। उन्होंने फिलिस्तीन, इराक और लेबनान के मामले पर खासतौर से गौर किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि इस्लाम के आधार पर राष्ट्रीय पहचान और सभ्यता को मजबूत बनाया जाये।

●खतना के द्वारा एड्स के फैलाव की रफतार कम की जा सकती है :

संयुक्त राष्ट्र की संस्था डब्ल्यू एचओ ने अमरीका में एड्स के तेजी से बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए मर्दों के खतने को प्रभावशाली साधन करार दिया। एड्स और खतने के बीच सम्बन्ध पर एक अनुसन्धान में कहा गया कि इस अमल से लाखों जिन्दगियों को बचाया जा सकता है। यू०एन०एड्स के चीफ वैज्ञानिक परामर्शदाता कैथरा हैसिन काटन ने इस बारे में कहा कि यह अनुसन्धान हमारे लिए एक अच्छे समाचार का दर्जा रखाती है। अनुसन्धान के अनुसार खतने को बचपन ही में करा देना चाहिए इस से बहुत सी पेचीदगियों से बचाया जा सकता है। बड़ी उम्र के मर्दों में खतना न केवल महंगा बल्कि कष्टदाई होता है।

हज यात्रियों की सुरक्षा के लिए सहयोग मांगा

इस बार हज यात्रा के दौरान किसी दुर्घटना से बचने के लिए सऊदी अरब ने भारत समेत दूसरे देशों से सहयोग की अपील की है। हज के सातवें दिन मीना से बाहर आने के लिए जबरदस्त भीड़ उमड़ पड़ती है। बीते कुछ वर्षों में भगदड़ मचने से बड़ी संख्या में हजयात्रियों की मौत हो चुकी है।

भारत के विदेश राज्य मंत्री ई० अहमद ने गत दिनों जेद्दा में कहा कि हज मंत्री डॉक्टर फुआद अल फारसी ने हमसे हज के पांचवें दिन यातायात नियंत्रण में मदद की अपील की है। हज यात्रा पांच दिनों की होती है, लेकिन कुछ यात्री छठे दिन भी रुकते हैं।